मसीही आह्वान

जनवरी - 2019 मासिक पत्रिका अंक - 1 एक प्रति : ₹ 20

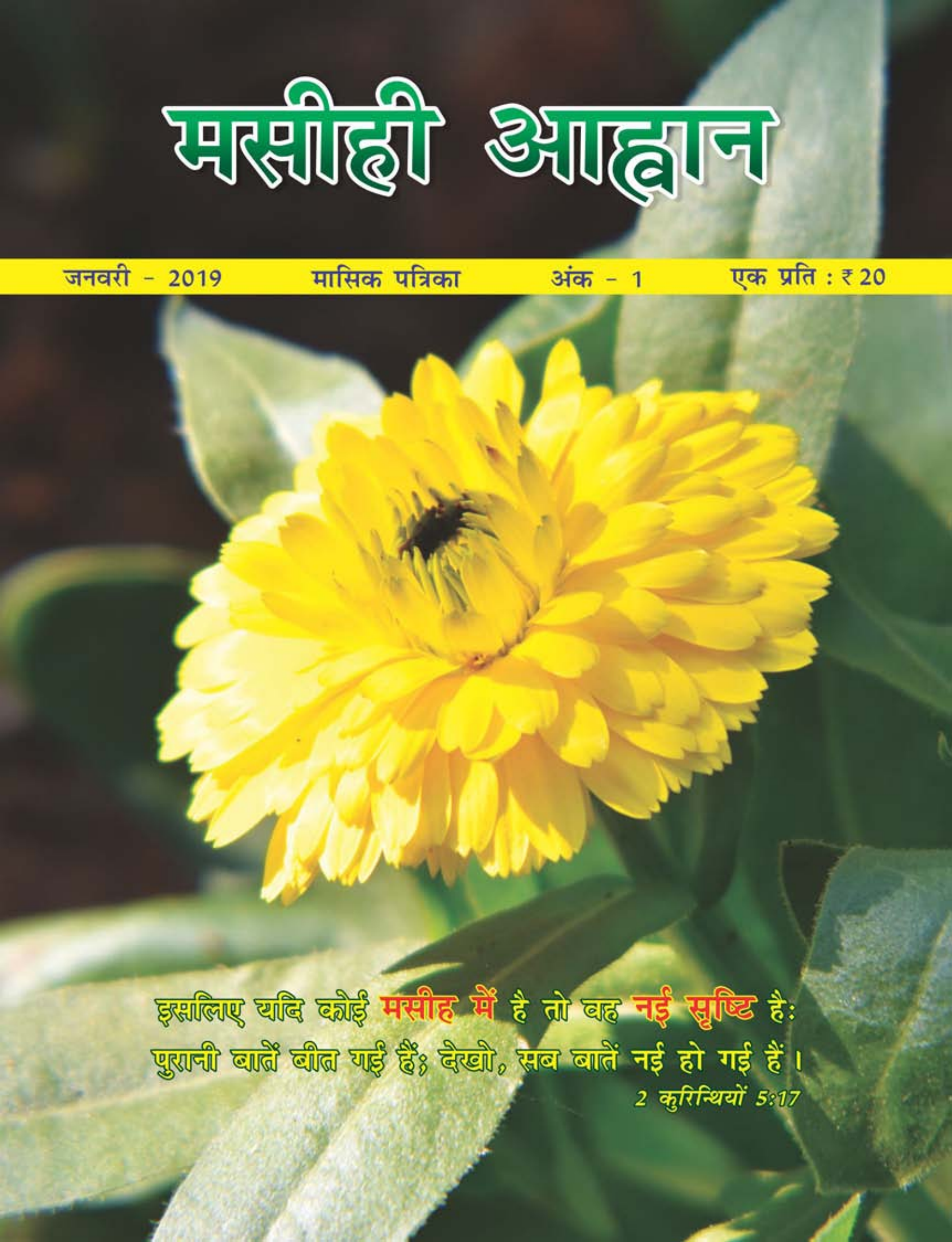

इसलिए यदि कोई **मसीह में** है तो वह **नई सृष्टि** है:
पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।

2 कुरिन्थियों 5:17

नववर्ष और गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं !

मसीही आह्वान के समस्त पाठकों, लेखक – लेखिकाओं एवं शुभचिन्तकों को जीबीईटी मिनिस्ट्री एडवांसमेन्ट टीम (मैट) की ओर से नव वर्ष एवं गणतंत्र दिवस की असीम शुभकामनाएं।

हमारी प्रार्थना है कि प्रभु इस नववर्ष 2018 में नई आशीषें आप सभों को प्रदान करें, ताकि आप दूसरों के लिए आशीष बन जाएं।

रेव्ह. टी. एस. सी. हंस
प्रेसिडेन्ट, मैट

शेत सोनवानी
वाइस प्रेसिडेन्ट, मैट

जी. वी. रक्षित
सेक्रेटरी, मैट

COMPUTER SOLUTION

DEALS IN
Laptop and Desktop,
Computer & Laptop Repair
also CCTV Setup, A/C Software,
Biomatric Device, Data Recovery

G-26, Ground Floor, Roshpa Tower, Main Road, Ranchi (Jharkhand)
Mob. 9431173903, 8298131587, Shop No. 6206132044
E-mail : solutionpc@rediffmail.com, computersolutionranchi@gmail.com

सम्पादक :
नीलम सोनाली तिर्की
•
सहायक सम्पादक :
श्रीमती अमिता बाखला
•
सम्पादन समिति :
श्री शेत सोनवानी
रेव्ह. टी. एस. सी. हंस, रेव्ह. डॉ. ए. के. लामा
श्री सुरेन्द्र किस्कू
•
कार्यकारिणी समिति :
श्री विद्युत मिंज, श्री जयवंत पुर्ती
•
प्रबंधक मंडल :

श्री शेत सोनवानी	भाई आर. स्टीफन पॉल
रेव्ह. जुलियस अशोक शॉ	श्री वाल्टर भेंगरा
रेव्ह. टी. एस. सी. हंस	इंजी. बाबुल वर्मा
रेव्ह. डॉ. आर. सी. यादव	श्री एलेन डायस
रेव्ह. डॉ. सी. एस. आर. गीर	श्रीमती शीला लकड़ा
रेव्ह. डॉ. अनिल मार्टिन	डॉ. शैलेन्द्र जोसेफ

आवरण पृष्ठ सज्जा – अमिता बाखला एवं विद्युत मिंज
तस्वीर – संत पॉल कैथेड्रल, बहुबाजार, रांची (झारखण्ड)

सदस्यता सहायता राशि

एक प्रति	:	**₹ 20**
वार्षिक सदस्यता	:	**₹ 200**
6 वर्षों के लिए	:	**₹ 1000**

नोट : आप सभी पाठकों एवं शुभचिंतकों से अनुरोध है कि यदि आप नवीनीकरण, विज्ञापन, दान या उपहार इत्यादि का भुगतान डी.डी. द्वारा करना चाहते हैं तो कृपया इस नाम में (IN FAVOUR OF) करें:-

GOOD BOOKS TRUST ASS. PVT. LTD. MASIHI AHWAN

(कृपया चेक द्वारा भुगतान न करें।)

व्यवस्थापकीय कार्यालय
मसीही आह्वान
गुड बुक्स बिल्डिंग, दूसरी मंजिल,
मेन रोड, राँची – 834 001 (झारखण्ड)
फोन : 0651- 2331394 • E-mail : masihiahwan@gmail.com

मसीही आह्वान

पारिवारिक मसीही पत्रिका

जनवरी - 2019 वर्ष - 9 अंक - 1

इस अंक में....

सम्पादकीय	2
नूतन वर्ष की आशीष	3
इस नए वर्ष अपने जीवन को पुनः खोज निकालें!	5
नव वर्ष, नया आरंभ, नयी चुनौती	8
नव वर्ष उत्सव–जवानी के दिनों में	10
नन्ही दुनिया	13
नीले आसमां के पार जाएंगे	18
सुनहरी पतंग	19
सिंहों की मांद	21
उगने वाले बीज का दृष्टान्त	24
सेहत	26
विज्ञान जगत	27
चर्चा परिचर्चा	28
बाइबल क्विज	30
सर्वशुद्ध हल	31

Rates of Advertisement in MASIHI AHWAN

LAST COVER PAGE :	**Full Page ₹ 2000**	**Half Page ₹ 1000**	**Qtr. Page ₹ 500**
INSIDE COVER PAGE :	**Full Page ₹ 2000**	**Half Page ₹ 1000**	**Qtr. Page ₹ 500**
INSIDE PAGE :	**Full Page ₹ 1000**	**Half Page ₹ 500**	**Qtr. Page ₹ 300**

संपादकीय घोषणा : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में प्रस्तुत विचारों के लिए लेखक/लेखिका व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार हैं। उनके विचार मसीही आह्वान कार्यालय का आवश्यक रूप से प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। इस पत्रिका के सभी कर्मचारी अवैतनिक तौर पर सेवा नियुक्त हैं।

सम्पादकीय....

अतिथि सम्पादक

नववर्ष धन्यवाद, मूल्यांकन व समीक्षा का समय

आज जनवरी 2019 का प्रथम दिन है एवं बड़े ही हर्ष उल्लास आनन्द एवं आशाओं के साथ हम सभी नववर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। कल का दिन जो बीत गया 2018 उसके साथ ही हमने अहले सुबह उसे अलविदा कह दिया है। बहुत सारी बातों, विचारों के साथ हम इस नववर्ष में कदम रख चुके हैं। जीवन विधाता का सर्वोत्तम उपहार तो है ही लेकिन इससे बढ़कर यदि यह जीवन सुरक्षित है तो यह और भी ईश्वर के प्रति हमारे मन को कृतज्ञता और सम्मान से भर देता है। बाइबल में हम पढ़ते हैं कि यिर्मयाह नबी परमेश्वर की बड़ाई और आभार प्रगट करते हुए यह कहता है ''हम मिट नहीं गये यह परमेश्वर की महाकरुणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है। प्रति भोर वह नई होती रहती है, तेरी सच्चाई महान है'' (विलापगीत 3:22,23)।

प्रिय मित्र क्या आज हमारा हृदय परमेश्वर के प्रति धन्यवाद से भर नहीं जाना चाहिये। जहां तक निजी जिन्दगी का सवाल है, मेरा अपना मन और हृदय परमेश्वर के प्रति इस नववर्ष में अत्यन्त आभारी है। शायद आज मैं जिन्दा नहीं होता यदि प्रभु ने मुझे नहीं सम्भाला होता। जीवन नश्वर है, मृत्यु निश्चित है लेकिन मृत्यु के बाद भी एक जीवन है, जिसे देने के लिये प्रभु ने मुझे बुलाया है और वह अनन्त जीवन है, सदाकाल का। अब आइये हम सभी इस नववर्ष में प्रभु को सबसे पहले धन्यवाद दें। साथ ही दूसरी महत्वपूर्ण बात जो इस नववर्ष से है, उसे हम समीक्षा कहेंगे। हम अपने जीवन की समीक्षा करें इसका मूल्यांकन करें, बिना इसके यह जीवन के प्रति विधाता के प्रति, अकृतज्ञता होगी। कितनी बुराइयां पाप और अपराध और गलतियां हमसे हुई होंगी लेकिन प्रभु ने इन सबके बावजूद हमें माफ किया है। भजन संहिता में राजा दाऊद कहता है, हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह और उसके किसी उपकार को ना विसराना अर्थात् भूल ना जाना। ''आज इस वर्ष आप और मैं आत्म चिन्तन आत्म मंथन में थोड़ा समय लगायें क्योंकि यही परमेश्वर हमसे चाहते हैं। हमारा अतीत हमें बहुत सी बातें सिखलाता है। किसी ने कहा जब जागो तभी सबेरा है।''

परमेश्वर तो हमारा मूल्यांकन करते ही हैं हम इससे इन्कार नहीं कर सकते। लेकिन हम अपनी समीक्षा स्वयं भी करें। आप हारने एवं जीतने वाले से दो महत्वपूर्ण बात सीखते हैं। जिनमें प्रथम बात है कि हम वह सब ना करें जिससे हम हार जाते हैं और दूसरी बात है, हम वह करें जिससे हम जीते हैं। अन्तिम बात इस नववर्ष में हमें करनी होगी, वह है कि हम प्रतिज्ञा करें, संकल्प लें, लक्ष्य निर्धारित करें। अतीत अतीत है, वर्तमान अब आपके सामने है तथा इसके साथ ही भविष्य भी मुंह बायें खड़ा है। जीवन के ये तीन काल बड़े अहमियत रखते हैं। मैं नहीं जानता कि आपके जीवन में आपने क्या प्रतिज्ञा की है ? लेकिन आवश्यक है कि हम इस नववर्ष में प्रभु के साथ नये आत्मीय संबंध को कायम करें, जीवन अधिक उज्जवल होगा। यह चुनौतियों एवं संघर्ष से भरा होगा, इसमें लक्ष्य एवं निशाना होगा लेकिन इस जीत में इस सफलता में आत्म संतोष होगा। यिर्मयाह नबी की पुस्तक के 31वें अध्याय के 31वें वचन में परमेश्वर कहता है ''सुन ऐसे दिन आनेवाले हैं, जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बाँधूंगा।'' क्या आप जानते हैं यह वाचा यह करार हमारे हृदय रूपी पट्टियों पर लिखी गयी है। हम परमेश्वर के साथ नये संबंध में बन्ध जाते हैं। प्रिय मित्र, क्या इस नववर्ष में यह हमारा नया संकल्प नहीं होना चाहिये ? जीवन बहुत ही क्षणभंगुर है, इसलिये इस नववर्ष में परमेश्वर के साथ नये संबंध कायम करिये। यह इस वर्ष का नवीन लक्ष्य हो। हम संकल्प लें, दूसरों के साथ, पड़ोसियों के साथ नये संबंध बनाने का। हम देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं समस्त मंत्रियों, प्रशासकों के लिये प्रार्थना करें। हमारी प्रार्थना देश से घृणा, भ्रष्टाचार, अन्याय, साम्प्रदायिक वैमनस्यता, लड़ाई झगड़े दूर करने की हो। हम नये समाज के निर्माण के लिये दृढ़ संकल्प ले। हम इस नववर्ष में हर पाप, बुराई को पूर्णरूपेण त्याग कर धार्मिकता के पथ में चलें। हम संत पौलुस की तरह पुराने जीवन को त्याग करके नये जीवन को धारण कर लें। नया स्वभाव नया मन इस वर्ष का हमारा नारा हो।

अंत में समस्त सुधि पाठकों, लेखकों एवं दानदाताओं को उनके सहयोग के लिये धन्यवाद देना चाहता हूं। आज आपके, सम्पादन मण्डल के स्नेहयुक्त सहयोग एवं प्रार्थना के कारण पत्रिका इस मुकाम तक पहुंच चुकी है। मेरी आशा है कि आप सभी का सहयोग यथावत बना रहेगा। समस्त देशवासियों, पाठकों, लेखकों, दान दाताओं, मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ. ए. के. लामा एवं उनके पूरे स्टाफ को नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस की शुभकामनायें एवं बधाई स्वीकार हो। प्रभु आप सबों को बड़ी आशीष दे।

नववर्ष की बधाइयों एवं प्रार्थनाओं के साथ आप का भाई –

शेत सोनवानी

आत्मिक भोजन

1 जनवरी **प्रभु के साथ** **निर्गमन 33:15,16**

आज वर्ष 2019 का प्रथम दिन है, और यह दिन हमें स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर ने वर्ष 2018 में किस प्रकार से हमें संभाला तथा हमारे साथ-साथ चला। मूसा परमेश्वर द्वारा नियुक्त वह अगुवा था, जिसने उससे कहा ''यदि आप ना चले तो हमें यहां से आगे ना ले जा'' प्रिय मित्र, हमें स्मरण रखना चाहिए कि जो परमेश्वर इस्राएलियों को दासत्व के घर से निकाल कर ले आया एवं उनके साथ चला तो क्या वह इस नववर्ष में हमारे साथ ना चलेगा? हमें परमेश्वर पर विश्वास करना होगा जो यह कहते हैं कि वह ना हमें छोड़ेगा ना त्यागेगा। वह आप ही इस वर्ष 2019 में हमारे साथ-साथ चलेंगे एवं हमें विश्राम देंगे।

प्रार्थना – हे प्रभु, नववर्ष में आपकी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करते हुए आगे बढ़ता जाऊं।

नूतन वर्ष की आशीष

...धर्मीजन नये पत्ते की नाईं लहलहाते हैं!

नीतिवचन अध्याय 11:28

भूमिका :- पवित्र धर्मशास्त्र के नीतिवचन नामक पुस्तक के 6वें अध्याय में धर्मीजन को आशीष मिलने का महत्वपूर्ण पाठ अध्ययन करने को मिलता है। हमें कब यह उत्तम आशीष मिलेगी? जब हम इन वचनों का अध्ययन कर पालन करेंगे। जब धर्मीजन नए पत्तों की तरह लहलहाते हैं। तब धर्मीजन के कार्य और जीवन से समाज को आशीष प्राप्त होती है। रेव्ह. जॉन वेसली को एक पुस्तक वाला व्यक्ति कहते थे क्योंकि उसने अपने जीवन भर मात्र पवित्र बाइबल से ही प्रेम किया। इस महान संत को बाइबल का कीड़ा कहा गया। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में मेथोडिस्ट समूह को बाइबल का कीड़ा कहा गया और यह इस समूह के लिए सर्वश्रेष्ठ उपाधि थी। मेथोडिस्ट समूह ऑक्सफोर्ड में नए पत्तों की तरह लहलहाते थे।

1. धर्मीजन के कारण समाज में आशीष है (पद 3अ) :- जब धर्मी सेवक धार्मिकता के साथ कलीसिया की अगुवाई करता है तब इन धार्मिक अगुवे के धर्म के कारण समाज के लोगों का बचाव होता है। यह बात सत्य है कि नगर के धर्मी लोगों के आशीर्वाद से नगर की बढ़ती होती है। संत फ्रांसिस ऑफ असीसी की गिनती पुरोहित के श्रेणी में नहीं होती थी लेकिन उसने पुरोहित से अधिक कार्य किया और संत का नाम कमाया। उनके धार्मिक और सामाजिक कार्यों को देख कर उन्हें दूसरा मसीहा कहा गया। एक धार्मिक संत ने अपने सेवा कार्य से पूरे समाज को आशीष दी।

2. धर्मीजन का वंश धार्मिकता के कारण बचता है (पद 21ब) :- धर्मी विपत्ति से छूट जाता है, धर्मी के कल्याण से नगर प्रसन्न रहता है। धर्मी जन ज्ञान के कारण बचते हैं। हनोक तीन सौ वर्ष तक परमेश्वर के साथ साथ चलता रहा। उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और हनोक की कुल अवस्था तीन सौ पैंसठ वर्ष की हुई। और हनोक परमेश्वर के साथ-साथ चलता था फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया। हनोक का वृत्तांत व्यक्तिगत धार्मिकता के लिए था (उत्पत्ति 5:22-25)।

नूह धर्मी पुरुष और अपने समय के लोगों में खरा था। नूह परमेश्वर के साथ-साथ चलता रहा। फिर परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को आशीष दी। उन से कहा कि फूलो-फलो, और बढ़ो और पृथ्वी में भर जाओ। नूह की धार्मिकता के कारण उसका परिवार नष्ट होने से बच गया। इससे उत्तम उदाहरण हो नहीं सकता कि एक व्यक्ति की धार्मिकता ने सम्पूर्ण वंश को धर्मी ठहराया (उत्पत्ति 8:15-19)।

3. धर्मीजन पड़ोसी की प्रसन्नता खोजता है (पद 27अ) :- धर्मीजन पड़ोसी के प्रति उत्तरदायी होता है। धर्मीजन दूसरों की सहायता करता है। धर्मीजन पड़ोसी को निर्बुद्ध नहीं समझता है। धर्मीजन अपनी प्रसन्नता से आनंदित नहीं होता है। वह निरंतर अपने पड़ोसी को खुश करने का प्रयत्न करता है और यह एक अत्यंत कठिन कार्य है।

यीशु ने कहा कि इसी के समान यह दूसरी आज्ञा भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख जो सारी व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं का आधार है (मत्ती 22:38-40)।

हम अपने भाइयों ही को नमस्कार करें तो कौन सा बड़ा काम करते हैं। इसलिये धार्मिक व्यक्ति उस समय सिद्ध बनता है जब वह बिना पक्षपात और भेदभाव के सेवा करता है।

4. धर्मीजन विश्वास में दृढ़ रहता है (13ब) :- धर्मीजन दृढ़ रहकर जीवन प्राप्त करता है धर्मी जन का वंश बचाया जायेगा। अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है; और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है।

5. धर्मीजन उदारतापूर्वक सहायता करता है (पद 24अ) :- धर्मी अनाथों की सहायता करता है। उसे घटी नहीं होती है। जो धर्मी दूसरों की सहायता करता है लोग भी उसकी सहायता करते हैं। यह आरंभिक कलीसिया की सत्य घटना है। उस कलीसिया में कोई भी दरिद्र न था, और जैसे जिसे आवश्यकता होती थी, उसके अनुसार हर एक को बांट दिया करते थे। बरनबा अर्थात् (शान्ति का पुत्र) था। उसकी कुछ भूमि थी, जिसे उसने बेचा और दाम के रुपये लाकर प्रेरितों के पांवों

आत्मिक भोजन

2 जनवरी **पारदर्शिता** **इब्रानियों 12:14**

आज वर्तमान संसार में आपसी प्रेम, मेल-मिलाप, समझदारी एवं भाईचारे का अभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। हम ईर्ष्या, क्रोध, जलन की अग्नि में जल रहे हैं। अत: शायद इन सबका कारण मसीही प्रेम, आत्मा की एकता तथा पारदर्शिता का लुप्त होना है। वचन कहता है कि हम अपने भाई को ना ठगें और ना उसका बुरा चाहें। उसके साथ अन्याय ना करें और ना ही उसके प्रति नकारात्मक विचार रखें।

प्रार्थना - हे प्रभु, हमारे आपस के प्रेम और मेल-मिलाप को शैतान तोड़ने ना पाये।

पर रख दिए। बरनबा ने पौलुस को बचाया और उसे नायक बनाया (प्रेरित 4:34-36,9; 23-27)।

उपसंहार :- धर्मीजन के नए पत्तों की तरह लहलहाने का अर्थ है कि धर्मी व्यक्ति का हृदय सदैव पवित्र रहता है जिसके कारण वह भलाई ही करता है। मैं एक सत्य घटना का वर्णन कर रहा हूं। एक स्वामी अपने जवान दास को लेकर दासों के बाजार घूमने जाता है। स्वामी अपने जवान दास से पूछता है, तुम्हें इन दासों में से किसी को मुक्त करना है तो बोलो? जवान दास की नजर एक वृद्ध की ओर अटक गई। जवान दास ने अपने स्वामी से विनती में कहा, महोदय, इस दास को मुक्त कर दो, स्वामी ने जवान दास से वृद्ध को मुक्त करने का कारण पूछा। जवान दास ने उस वृद्ध दास की आंखों में आंखें डालकर कहा इसने मुझे पन्द्रह वर्ष पूर्व आपको बेचा था। स्वामी ने जवान दास की बात मान ली। हम उपकार और परोपकार करते रहें तो इसका प्रतिफल परमेश्वर देंगे। ❑

आप सभी पाठकों को नूतन वर्ष की ढेरों शुभकामनाएं!

रेव्ह. विनय पीटर
निदेशक केरव्ज, जबलपुर, मध्य प्रदेश

मन की शांति के लिए रेडियो कार्यक्रम सुनें

आप हमारे वेबसाइट पर भी कार्यक्रम सुन सकते हैं www.gbetministries.com

क्र.सं.	भाषा	कार्यक्रम का नाम	समय (IST)	दिन	मीटर बैण्ड
1.	Dzongkha	Rewa Ghie Tsik	शाम 6:30-6:45	शनि एवं रवि	SW 25
2.	डोगरी	प्रेमे कन्ने	शाम 7:15-7:30	शनि एवं रवि	SW 31
3.	कश्मीरी	नूर अगूर	शाम 7:15-7:30	शनि एवं रवि	SW 31
4.	गढ़वाली	आशा कू रैबार	शाम 7:30-7:45	सोम से शुक्र	SW 31
5.	हिन्दी	महिमा के वचन	शाम 7:30-8:00	शनि एवं रवि	SW 31
6.	हिन्दी	आशा की किरण	शाम 7:45-8:00	शनि एवं रवि	SW 31
7.	हिन्दी	आशा दीप	शाम 8:00-8:15	सोम से शुक्र	SW 31
8.	संगला	Rechha Ga Sung	शाम 6:45-7:00	शनि एवं रवि	SW 25
9.	सराजी	Jeevan Di Baat	शाम 7:00-7:15	शनि एवं रवि	SW 25
10.	ओड़िया	Mukti Ko Margo	शाम 7:15-7:30	शनि एवं रवि	SW 25

आत्मिक भोजन

3 जनवरी **सामर्थ एवं घमण्ड** **2 इतिहास 26:16-18**

राजा उजिय्याह 16 वर्ष की उम्र में ही अपने पिता के निधन के बाद राजा बन गया। एक समय तक वह परमेश्वर की निकटता में चलता रहा उसका भय मानता रहा। परिणामस्वरूप उसे सफलता और महिमा मिली। प्रिय मित्र, ऐसा आज्ञाकारी परमेश्वर का भक्त जन समय के अंतराल में सामर्थ और अहंकार के कारण विनाश के गर्त्त में जा गिरा। जो काम याजकों का था उसे स्वयं अपने हाथ में लेके उसने परमेश्वर का अपमान किया। प्रिय मित्र, परमेश्वर का तिरस्कार और उसका अपमान करने के कारण उसका करुण अंत एक कोढ़ की बीमारी से हुई।

प्रार्थना - हे प्रभु, अहंकार एवं सामर्थ के कारण आपके प्रकोप का शिकार ना बनने पाऊं।

इस नए वर्ष अपने जीवन को पुनः खोज निकालें!

क्या हमने कभी सोचा कि हम सभी क्यों, हमेशा नए साल का इंतज़ार बड़ी बेसब्री से करते हैं? एक पल के लिए रुकें और इसके बारे में सोचें कि कौन सी बात मुझे नए साल का इंतज़ार करने के लिए विवश करती है, उसमें ऐसा क्या खास है? हम सबों के पास इस साधारण सवाल के कई अलग-अलग उत्तर हो सकते हैं, जैसे-अगले वर्ष मैं एक नया व्यवसाय शुरू कर रहा हूं, अगले साल मेरी बहन शादी कर रही है, हमारे परिवार में एक नया सदस्य जुड़ने जा रहा है, आने वाले वर्ष में मुझे एक नई नौकरी मिलने जा रही है, संभावना है कि पदोन्नति होगी, मेरे माता-पिता कि 25वीं शादी की सालगिरह होगी, मेरा बच्चा पहली बार अपने स्कूली शिक्षा को शुरू करेगा, मैं अपने अगले अध्ययनों के लिए विदेश जाऊंगा, अगले वर्ष से मैं ध्यान दूंगा और चर्च गतिविधियों में शामिल रहूंगा क्योंकि अब तक मैं असफल रहा हूं। इन सभी बातों में एक बात बहुत आम है कि कुछ नया, कुछ अलग या ताज़ा होने वाला है जिसके लिए हम उत्सुकतापूर्वक या उत्साहित होते हैं।

नवीनता हमेशा हमें एक जबरदस्त खुशी और संतुष्टि देती है और यह मानव प्रवृत्ति है, ताज़गी हमेशा हमें मानव के रूप में आकर्षित करती है। जब हम बाजार जाते हैं तो हम ताज़ा सामान, नए कपड़े, ताज़ा भोजन, ताज़ी सब्जियां, नए घरेलू उपकरणों की खोज करते हैं और उनकी समाप्ति की तिथियों की जांच भी करते हैं, ताकि इसके सड़ने, बिगड़ने या कार्यहीन होने से पूर्व इसका प्रयोग कर लिया जा सके। जब हम मनुष्य होकर उन वस्तुओं को पसंद नहीं करते हैं जो नई या ताज़ी न हो तो हम कैसे परमेश्वर से उम्मीद कर सकते हैं जो हमारे जीवन का निर्माता है, वह अभी हमें देखे और हमारे बारे में खुश और संतुष्ट महसूस करे। जब हम अपने आपको ताज़ा और नया बनाये रखने के लिए खुद प्रयास नहीं करते, हम अपने कर्मों, व्यवहार और हमारी दैनिक गतिविधियों के माध्यम से अपने आपको कार्यहीन बनने की अनुमति देते हैं जो कि परमेश्वर के नियमों के अनुरूप नहीं है।

परमेश्वर बिगड़ा हुआ, भयानक, अप्रिय या जिनका प्रयोग नहीं किया जा सकता हो उन चीज़ों को पसंद करता। परमेश्वर हमें सेकेंड/मिनट/घंटे/दिन/सप्ताह/महीने और वर्ष इसलिए देते हैं कि हम पुनर्विचार करें कि यह जीवन मुझे क्यों दिया गया है। क्या यह सिर्फ आनंद लेने के लिए है या इन आशीषों से जुड़े परमेश्वर की कुछ विशिष्ट योजनाएं हैं। परमेश्वर निश्चित रूप से हमें आनंद का जीवन देना चाहते हैं और वह चाहते हैं कि हम इसका जितना हो सके उतना आनंद लें। अपने आप में जीवन एक सबूत है कि हम जीवित हैं और हमें बदले में हमारे प्रभु परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए। ***हम अपने परमेश्वर, सृष्टिकर्ता को कैसे धन्यवाद दे सकते हैं और परमेश्वर को धन्यवाद देना और अधिक महत्वपूर्ण क्यों हो जाता है?*** उत्तर बहुत ही आसान और स्वच्छ पानी की तरह साफ है कि उसने हमें बचा लिया है और मेरा जीवन अब मेरा नहीं बल्कि उसका है; हम उसके बहुमूल्य रक्त से खरीदे गए हैं वचन 2 कुरिन्थियों 5:17 में कहा है ***''इसलिए, यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।''***

लेकिन मसीह में आने के बाद भी हम अपने पुराने तरीकों पर ध्यान देते हैं और उन्हें खोना नहीं चाहते। इसलिए कभी-कभी पुराने विश्वासी की तुलना में एक नया विश्वासी अधिक भरोसेमंद, और बेहतर माना जाता है, क्योंकि उसने कुछ खास, कुछ नया, बहुत अनूठा पाया है और यही कारण है कि नया विश्वासी मसीह को कहीं अधिक महत्व देता है। पुराने विश्वासी आमतौर पर परमेश्वर के वचन को पढ़ने, चर्च जाने और चर्च गतिविधियों में शामिल होने की परवाह नहीं करते हैं। यहां मैं किसी के उद्धार पर सवाल नहीं उठा रहा हूं; यह परमेश्वर और उस व्यक्ति के बीच की बात है। लेकिन मैं यह पूछना चाह रहा हूं कि क्या सुसमाचार की प्रगति के लिए मेरे जीवन का उपयोग परमेश्वर कर रहे हैं? यदि हां, तो आप वचन अनुसार चल रहे हैं, अगर नहीं, तो हमें अपने जीवन के उद्देश्य के बारे में पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

परमेश्वर चाहते हैं कि हम इस जीवन को दूसरों के साथ

आत्मिक भोजन

4 जनवरी **सांसारिक अभिलाषायें** **1 यूहन्ना 2:15-17**

संसार का आकर्षण मानवीय जीवन को अपनी ओर खींचता है। मनुष्य शरीर, आंखों एवं जीविका की अभिलाषाओं के लोभ से ओत-प्रोत है। जिस तरह से आध्यात्मिक, नैतिक एवं बौद्धिक मूल्य नष्ट हो रहे हैं उन्हें देखकर हमें बड़ा अफसोस होता है। वचन कहता है कि आत्मा शरीर की और शरीर आत्मा के विरोध में लालसा करता है। प्रिय मित्र, आज के वचन से हमें शिक्षा मिलती है कि हम संसार के मोहमाया में न फंसें बल्कि हम परमेश्वर की इच्छा पर चलें जिसका परिणाम अनन्तकाल के जीवन की प्राप्ति है।

प्रार्थना - हे प्रभु, हम सांसारिक अभिलाषाओं का दमन करते हुए आपकी इच्छानुसार जीवन भर चलते रहें।

जो हमने उस परमेश्वर में पाया है साझा करके अपने जीवन का आनंद लें अर्थात् उसके विषय बतलाएं ताकि दूसरे भी बच सकें। और यही कारण है कि उसने हमारे लिए अपना जीवन दिया, ताकि मैं बच सकूं। मैं आपको बताता हूं, ***एक मसीही के लिए जीवन जीना मरने से अधिक कठिन है और मसीह के लिए सम्मानीय, आदरणीय, आनंददायक, फलदायी और साहसी जीवन जीना बहुत कठिन होता है,*** लेकिन यही परमेश्वर का वचन हमसे मांग करता है। अगर हम इस आने वाले नए साल में जीने के लिए तैयार नहीं हैं तो हम निश्चित रूप से इस आने वाले नए साल में मरने के लिए भी तैयार नहीं हैं, लेकिन बाइबल का पौलुस निश्चित रूप से दोनों तरह से तैयार था वह अपने उद्देश्य को जानता था, दूसरों को अनन्त मूल्यों की खोज करने में मदद करना। क्या हमारे पास पौलुस की तरह उत्साह है? क्या मसीह हमारे जीवन के माध्यम से सम्मानित हो रहे हैं? अगर उसे सम्मान मिल रहा है तो निश्चित रूप से मसीह भी हमें एक दिन सम्मानित करेंगे। ऐसा नहीं कि इस जीवन में हमारे सम्मानित जीवन से परमेश्वर में कुछ जुड़ता है, क्योंकि वह परिपूर्ण है, लेकिन जब हम उसके वचन के अनुसार चलते और आज्ञाकारी जीवन जीते हैं तो वह आनंदित एवं प्रसन्न होते हैं। हालांकि, फिलिप्पियों की पत्री के माध्यम से पौलुस कहता है कि इस धरती पर हम कई संघर्षों से गुजरते हैं। पौलुस को यह सुनिश्चित नहीं था कि उसे अपने विश्वास के आधार पर रिहाई या शहादत का अनुभव होगा। लेकिन वह एक बात के लिए अवश्य निश्चित था कि मसीह उसके माध्यम से महिमा प्राप्त करे, चाहे शरीर में होकर या बिना शरीर के, बस परमेश्वर को महिमा प्राप्त होनी चाहिए।

प्रियो, हमारे जीवन में कुछ निश्चित दृढ़ सिद्धांत होने चाहिए, चाहे कुछ भी हो मैं मसीह के लिए दृढ़ रहूंगा और सुसमाचार की प्रगति के लिए मसीह में एक साहसी जीवन जीने का प्रयास करूंगा। इस संसार को छोड़ने के बाद भी लोग आपको याद रखें। और यदि आप इसमें सफल होते हैं तो इस बात से आश्वासित हों कि यीशु अपनी भुजा खोले आपका स्वागत करेंगे और कहेंगे मेरे वफादार दास तू अंत तक विश्वास योग्य रहा। परमेश्वर ने आपको और मुझे एक दूसरे के लिए नियुक्त किया है, न केवल उन लोगों के लिए जिन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना है, बल्कि उन लोगों के लिए भी जो विश्वास में कमजोर हैं और हाल ही में परमेश्वर के साथ चलना शुरू किया है। हम परमेश्वर की संतान होने के नाते ऐसे लोगों के जीवन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, वास्तव में सभी को बढ़ने की जरूरत है, कोई भी यह नहीं कह सकता कि मुझे अब बढ़ने की आवश्यकता नहीं, जब हम अपने जीवन को दूसरों के साथ साझा करते हैं तो हम बढ़ते हैं, और उन्हें सहायता करते हैं उनके विश्वास के आनंद और फल को देखने और अनुभव करने में। पौलुस जेल में भी आनंद से रहता था, वह अपनी रिहाई के बारे में चिंतित नहीं था बल्कि वह चिंतित था कि लोगों को बचाया जाना चाहिए और यही अपने जीवन को पुनः खोजना है। याद रखें, जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, वह खुद के बारे में नहीं सोच रहे थे, बल्कि अपने लोगों के लिए, और अपनी मां के बारे में सोच रहे थे। बाद में पौलुस ने यह भी कहा कि मसीह के लिए दुख उठाना किसी भी पीड़ा से कम है। पौलुस जानता है कि उसका कारावास उसके छुटकारे का कारण बनेगा इसलिए नहीं क्योंकि वह जानता था कि वह जेल से बाहर निकल जाएगा, बल्कि वह जानता था कि जो कुछ भी हो यह उसे मसीह के करीब लाने के लिए कार्य करेगा, और यही सच्चा छुटकारा है। वह रोम में अपने साथी प्रचारकों को ठीक यही महसूस करने और सुसमाचार का प्रचार जारी रखने के लिए चाहता है।

यही वह फिलिप्पियों के विश्वासियों के लिए भी चाहता है। यद्यपि पौलुस इस धरती को छोड़कर मसीह के साथ रहने की इच्छा रखता है, फिर भी वह शरीर में रहने के मूल्य और फिलिप्पियों की प्रगति और उन्हें विश्वास में बढ़ाने के मूल्य को जानता है। पौलुस के लिए यह उपयोगी श्रम है। वह अपने जीवन को अन्य विश्वासियों की सेवा करने में लगाना चाहता है ताकि वे प्रभु की वापसी के दिन मसीह में पूर्ण पाए जाएं। वचन स्पष्ट रूप से मत्ती 16:25 में सूचित करता हैं, ***''क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।''***

उनके लिए पौलुस का लक्ष्य बड़ा भवन या आसान जीवन नहीं था वह चाहता था कि वे मसीह को पुरस्कार और बहुमूल्य खजाने के रूप में रखें और अधिक से अधिक परिणामस्वरूप उसके सभी आदेशों के प्रति वफादार एवं आज्ञाकारी हों। वह

आत्मिक भोजन

5 जनवरी **संतुष्ट जीवन** **1 तीमुथियुस 6:8**

1900 में किये गये शोध कार्य ने प्रगट किया कि लोगों को 72 चीजों की जरूरत सामान्य कार्य करने एवं संतुष्ट रहने के लिये होती हैं। तकरीबन पच्चास वर्ष के बाद एक अन्य शोध के अनुसार 500 चीजों की संख्या का योग आया। प्रिय मित्र, बाइबल तो हमें दो ही चीजों की सूची देती है खाने और पहनने को हो तो उन्हीं पर संतोष करना चाहिए। ''संतोषी तो सदा ही संतोषी होता है।'' हमारी जरूरतों को परमेश्वर भी जानते हैं, बस हम ही उस पर भरोसा नहीं रख पाते हैं।

प्रार्थना – हे प्रभु, आपकी महान सामर्थ का मूल्यांकन अनुचित ढंग से ना करूं।

चाहता है कि वे मसीह को अपने जीवन का केंद्र बना कर अपने आनंद में प्रगति करें। वह उनकी सेवा करता है ताकि वे मसीह की सेवा कर सकें। अत: उनके पास मसीह यीशु में महिमा के लिए पर्याप्त कारण हो। इसमें, मसीह की प्रशंसा होती है और यही पौलुस चाहता है। उसकी इच्छा है कि वह अपने साथ विश्वासियों के बीच अपने आनंदमय और फलदायी जीवन के माध्यम से मसीह को प्रशंसा दें। और हमें भी इसके लिए प्रयास करना चाहिए, हमारे तरीके और रणनीतियां पौलुस से अलग हो सकती हैं लेकिन हम पौलुस बन सकते हैं, बशर्ते हमें आने वाले नए साल में दूसरों के लिए बोझ हो। दशमांश देना, नए कपड़े खरीदना, दो घंटे की आराधना में भाग लेना, धन्यवाद का दान देना, चर्च में केक लाना या पादरी को विशेष उपहार देना, यह सब अपनी जगह ठीक है लेकिन ये बातें सुसमाचार की प्रगति में मदद नहीं करती हैं। इस धरती पर हमारे अस्तित्व का विशेष उद्देश्य है कि हम सुसमाचार के प्रगति में सहायता एवं सहयोग करें।

हर साल हम कई अलग-अलग कारणों से संकल्प लेते हैं और ज्यादातर में हम असफल होते हैं। क्यों, हमारे इतने सारे संकल्प विफल हो जाते हैं? कभी-कभी यह केवल इसलिए होता हैं क्योंकि वे यथार्थवादी नहीं हैं। इसके बजाए, वे केवल इच्छापूर्ण सोच हैं, वास्तव में उन्हें सफल बनाने का कोई तरीका हमारे पास नहीं है। अन्य संकल्प भी विफल हो जाते हैं क्योंकि हम उन तक पहुंचने के लिए आवश्यक बलिदान करने के लिए तैयार नहीं होते हैं।

आइए हम इस साल केवल एक ही संकल्प करें कि मेरे माध्यम से मसीह का प्रचार हो। और जब हम ऐसा करते हैं तो हम आसानी से अपने जीवन को फिर से खोज निकालते हैं। इस नए साल में हम न केवल अपने लिए बल्कि दूसरों के लिए एक विशेष व्यक्ति बनें; दूसरों को आपके माध्यम से मसीह का अनुभव करने दें। पौलुस ने यही किया और यही कारण है कि वह कह सकता है, ***''मैं यह सब उसके द्वारा कर सकता हूं जो मुझे शक्ति देता है''*** (फिलिप्पियो 4:13)।

याद रखें, जब तक हम सुसमाचार की प्रगति के लिए काम करते रहेंगे, तब तक हमें न ही जंग लगेगा, न ही कार्यहीन या अनुत्पादक होंगे और यही जीवन को फिर से खोज निकालना होगा। तो आइए हम इस आने वाले नए साल में अपने जीवन को दोबारा खोज निकालें, क्योंकि उसने हमें पहले से ही जीवन दिया हुआ है।

आप सभी को नया साल मुबारक हो !

नितिन लाल
प्रेसबिटेरियन थियोलॉजिकल सेमिनरी
हिन्दी विस्तार विभाग के विभागाध्यक्ष
देहरादून, उत्तराखंड

सूचना

पाठकों द्वारा नवीनीकरण, विज्ञापन, दान या उपहार इत्यादि का भुगतान शीघ्रता से करने के लिए 'मसीही आह्वान' बैंक में राशि हस्तातंरण (NEFT) की सुविधा प्रदान कर रही है।

एनईएफटी के लिए विवरण

NAME	**-**	**GOOD BOOKS TRUST ASS. PVT. LTD. MASIHI AHWAN**
BANK	**-**	**BANK OF INDIA**
BRANCH	**-**	**CLUB SIDE, RANCHI**
A/C No.	**-**	**490210110007168**
IFSC CODE	**-**	**BKID0004902**

राशि हस्तांतरण के बाद अपनी सदस्यता संख्या, हस्तान्तरण की तिथि, फोन नम्बर, नाम और पता की जानकारी :- E-mail:goodbooksranchi@gmail.com द्वारा दें।

या फिर फोन नं. **0651-2331394** पर सूचित करें।

आत्मिक भोजन

6 जनवरी **अच्छा मित्र** **2 तीमुथियुस 4:16,17**

एक प्रसिद्ध कहावत है जरूरत के वक्त मित्र वास्तव में मित्र होता है। सभी ने संत पौलुस का साथ उसके कठिन दिनों में छोड़ दिया। लेकिन संत इस बात के लिये धन्यवाद देता हुआ प्रभु के प्रति और गहरी आस्था तथा आभार प्रगट करता है। प्रभु ने कहा है ना मैं तुम्हें छोड़ूंगा और ना तुझे त्यागूंगा।

प्रार्थना - हे प्रभु, हम अपने विश्वस्त मित्रों एवं सबसे विश्वस्त मित्र प्रभु यीशु के प्रति सदा आभारी बने रहें।

नव वर्ष, नया आरंभ, नयी चुनौती

जब परमेश्वर ने सृष्टि की रचना की, तब सब कुद परमेश्वर ने नया बनाया। सृष्टि जो है वो नवीनता की शुरूआत है। जो भी चीजें बनाई गईं, उसकी आयु भी परमेश्वर ने बनाई। पूरे ब्रह्मांड की सृष्टि आगे बढ़ते जाने के लिए हुईं। वह वहीं तक खत्म नहीं हुई। परमेश्वर ने मनुष्य को अपने सबसे सर्वोत्तम रचना ठहरा कर सृष्टि में रखा। चीजों का पुनः जन्म देने या पुनः पैदा करने की जिम्मेदारी सृष्टि को मिली। जैसे पेड़ नये पेड़ को, जानवर नये जानवर को और मनुष्य भी मनुष्य के रूप में नई सृष्टि को जन्म देता है।

प्रमुख पहला कारण :- हम परमेश्वर के स्वरूप व समानता में सृजे गये हैं, क्योंकि परमेश्वर सृजनहार है। इसलिए हम भी उसके स्वभाव के अनुसार रचना करते हैं। नई रचना परमेश्वर के जीवित होने की साक्षी है क्योंकि रचने वाला परमेश्वर है। हम भी उसके साथ सह रचनाकार हैं जो नई वस्तुओं की सृष्टि करते हैं।

सृष्टि क्यों करता है ? :- यह परमेश्वर का स्वभाव है। उत्पत्ति से उसका परिचय सृष्टिकर्ता के रूप में हुआ है। उसकी महानता को प्रकट करने के लिए, रचना को आगे बढ़ाने के लिए सृष्टि, सृष्टिकर्ता की आराधना व साक्षी देने के लिए है। पहाड़, नदी, मनुष्य, सृष्टिकर्ता द्वारा आराधना के लिए उसके आराधक के रूप में सृजे गये हैं। सृष्टि किया जाना आराधना की जिम्मेदारी है। परमेश्वर का हर स्पर्श नवीनता को जन्म देता है।

खतरा कब होता है? :- परमेश्वर एवं सृष्टि की महानता के बीच अंतर है। कई सृजी गई ताकते हैं। मनुष्य सृष्टि को देखता है तो वह सृष्टि से डरकर पूजता है जो कि गलत है। परमेश्वर ने सृष्टि की रचना इसलिए नहीं की कि वह इसको देखकर डरे। सृष्टि को सृष्टिकर्ता से बड़ा मानना पाप का आरंभ एवं हानि का विनाश है। नया जन्म जरूरी है।

सृष्टि ने अपना उद्देश्य खोया :- रच जाने के बाद वह अदन के बगीचे में शैतान व अनाज्ञाकारिता के इस्तेमाल से परमेश्वर के तुल्य बन जाने की परीक्षा में पड़ कर सारा ब्रह्मांड पापमय हो गया है। सृष्टि का उद्देश्य सृष्टिकर्ता के अधीन रहकर उसकी महानता को मानना था, पर वह उसके तुल्य हो जाने के घमण्ड के अधीन हो गया और अपनी पहिचान खो दी।

मसीह में नया साल : सही पहचान :- जब हम संसार में हैं, तो हमने अपने उद्देश्य व पहिचान खो दिया है। सारी दुनिया पुरानी सृष्टि है अर्थात् नये वर्ष में उनके लिए कुछ भी नया नहीं। जिसने अपने आपको खो दिया। परमेश्वर ने उसे नई पहचान दी थी लेकिन वह खो गया। शैतान हमें पुरानी पहचान जो पापी पहचान में रखकर हम पर अपना नियंत्रण बनाये रखता है।

हर एक जन जो मसीह में नहीं आया उसे पुराने जीवन से निकलना पड़ेगा। अर्थात् कोई चाहता है कि उसके जीवन में नव वर्ष हो तो सबसे पहले उसे पुराने जीवन से बाहर निकलना पड़ेगा। हमारे पुराने मनुष्यत्व की मृत्यु के बाद ही हम नये वर्ष में प्रवेश करने पायेंगे।

क्रूस, मृत्यु व पुनरुत्थान :- प्रभु यीशु वह महायाजक है जिस पर विश्वास करके मनुष्य नये जीवन या नये वर्ष में प्रवेश करता है। परमेश्वर द्वारा प्रभु यीशु मसीह का भेजा जाना, उसके दुःख, मृत्यु व बलिदान के द्वारा प्रत्येक विश्वासी को यह मिशन दिया गया है। जो नई सृष्टि नहीं है, और जो जगत में है वो मसीह में आयें और दूसरों के लिए भी नया वर्ष लेकर आयें। नया वर्ष 1 जनवरी नहीं है। यह क्रूस, मृत्यु एवं पुनरुत्थान पर विश्वास कर उद्धारकर्ता को स्वयं समर्पित करने का दिन है।

नये वर्ष का प्रभाव :- परमेश्वर पर विश्वास कर हम अपने अंदर एक नये व्यक्ति को जन्म देते हैं। उस पर कई क्षेत्रों में प्रभाव पड़ता है-वह अपनी नई पहचान से समाज में पहचाना जाता है।

- **प्रेम** :- जिस प्रकार सृष्टिकर्ता सृष्टि को जन्म देता है उसी प्रकार नया वर्ष भी नई सृष्टि को दर्शाता है। चारों तरफ नई महक, उमंग, खुशी व नये एहसास की अनुभूति होती है। नयी सृष्टि सबसे पहले प्रेम को पाती एवं बांटती है। नयापन प्रेम से ही आता है। नया होना तभी संभव है जब हम प्रभु से सबसे पहले ज्यादा प्रेम करते हैं। यही प्रेम

आत्मिक भोजन

7 जनवरी **हमारी जाँच** **भजन संहिता 65:8-10**

आज आमतौर पर हमारे देश में तरह तरह की जांच लोगों की हो रही है। यदि वे जांच में सही और खरे पाये जाते हैं तो उन पर कानूनी कार्यवाही नहीं होगी। प्रिय मित्र, परमेश्वर भी ठीक इसी तरह हमारी जांच करते हैं, यह देखने के लिये कि हम कितने सही हैं अपने जीवन में? परमेश्वर हमें परखते हैं, हम सोने एवं चांदी की तरह तापे जाते हैं। इसलिये वचन के प्रकाश में व्यक्ति अपनी अपनी जांच स्वयं ही कर ले। अन्यथा हम भी दण्ड के भागीदार होंगे।

प्रार्थना - हे प्रभु, आपके द्वारा जांचे जाने पर सही एंव खरा पाया जाऊं।

पड़ोसी को, अन्य विश्वास, अन्य संस्कृति के व्यक्ति को प्रभावित करता है। नई सृष्टि एक नया प्रेमी है। क्या यह नया वर्ष आपको एक नया प्रेमी बनायेगा या आप उसी स्वभाव में 2019 के साथ आगे बढ़ेंगे।

- **आशा :-** नया वर्ष हमारे लिए नई आशा लेकर आता है। जो निराशा अब तक थी नये वर्ष के आ जाने से उसमें नई आशाओं का जन्म होता है। शर्त यह है कि यदि कोई परमेश्वर में विश्वास करे तो जहां विश्वास है वहीं तो आशा है, क्योंकि जो सांस देता है वह आशा भी देता है। सब कहते हैं ''दुनिया उम्मीद से जीती है।'' जहां आशा नहीं वहां निराशा होगी। 2018 वर्ष में आप कितनी निराशाओं में जीये हैं। आपने अगर अपने को सही में जांचा होगा तो पाया होगा कि परमेश्वर से प्रेम न कर पाने से आप उससे दूर हो गये, कमजोर हुये, असफल हो गये, आपकी आशा जाती रही। 2019 में ''मैं आंखें पहाड़ों की ओर लगाऊंगा, मुझे सहायता कहां से मिलेगी, मुझे सहायता परमेश्वर की ओर मिलेगी'', इस पद के साथ चलें उसे अपनी आंखों का केंद्र बनायें आशा में आनंदित रहें।
- **जीवन :-** जिस प्रकार नई सृष्टि नये जीवन की साक्षी है। नई खुशी, नया सम्बन्ध है परमेश्वर के साथ। उसी प्रकार नया वर्ष में भी नई संगति आवश्यक है। जो कि वचन से पनपती वह मजबूत होती है और दूसरों के दर्द को महसूस करती है। जो आनन्द उसे मिला है, जो जो आशा उसे मिली वो दूसरों को भी मिले।

जिस दिन हम नई सृष्टि बनते हैं उसी दिन हम नये वर्ष में प्रवेश करते हैं। क्योंकि जिस दिन कोई व्यक्ति नया बनता है उसी दिन वह जन्म लेता है। यदि नया वर्ष प्रेम, आशा, नए जीवन से भरा हो तो एक मनुष्य के लिए और इससे अधिक सुन्दर बात क्या हो सकती है।

चुनौती :- नये वर्ष में प्रेम, आशा, जीवन आपके पास है तो उसे ही आप दूसरों को नए वर्ष में दे सकते हैं। जो आपको नया जीवन मिला है वही दूसरों को भी मिले। जो हमारे पास नया है, उसे ही हम नये साल में बांटकर दूसरों को नया जीवन दे सकते हैं। आप नये वर्ष में जो दूसरों को दे सकते हैं, वही आपको एक नई पहचान देगा। लेते तो सभी हैं पर आप देने वाले के रूप में जाने जायें।

यदि हर कलीसिया, विश्वासी, परिवार इसे चुनौती के रूप में लें तो संसार क्या ही सुन्दर बन सकता है!!!

रोहित चौहान
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

डाक-बाइबल पाठ्यक्रम
(BIBLE CORRESPONDENCE COURSE)

यदि आप परमेश्वर के वचन एवं बाइबल से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक हैं, तो हम से शीघ्र सम्पर्क करें।

हमारे यहां नि:शुल्क डाक-बाइबल पाठ्यक्रम की व्यवस्था है, जिसके अध्ययन से आप को आत्मिक लाभ अवश्य होगा। सम्पूर्ण पाठ्यक्रम (भाग-1) सात पाठों में विभाजित है, जिसे पूरा करने पर हम आप को एक प्रमाण पत्र भी प्रदान करेंगे।

यह पाठ्यक्रम सब के लिए उपलब्ध है। मुफ़्त अध्ययन के लिए कृपया शीघ्र इस पते पर हमें लिखें अथवा व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क करें :-

गुड बुक्स एजुकेशनल ट्रस्ट
गुड-बुक्स बिल्डिंग, दूसरी मंजिल
मेन रोड, राँची-834001 (झारखण्ड)

आत्मिक भोजन

8 जनवरी **दूसरों का मूल्यांकन** **मत्ती 7:1-5**

आज आम तौर पर हम दूसरों की गलतियों, दोषों और अपराधों को नजर अंदाज नहीं कर पाते। हम दूसरों का मूल्यांकन अपनी धार्मिकता के मापदण्डों पर करते हैं। यह बड़े दु:ख की बात है, क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा कि ''दूसरों पर दोष ना लगाओ ताकि तुम पर दोष न लगाया जाये। आज जरूरत है कि दूसरों का मूल्यांकन करने के बजाय हम अपने स्वयं के गुण दोषों का मूल्यांकन करें। दूसरों का न्याय और उनकी आलोचना करना बंद करें।

प्रार्थना - हे प्रभु, स्वधार्मिकता के घमण्ड में औरों को चोट पहुंचाना सदा के लिये बंद करूं।

नव वर्ष उत्सव–जवानी के दिनों में

'न या वर्ष का समारोह एक ऐसा उत्सव है, जिसे सम्पूर्ण विश्व में एक साथ मनाया जाता है, परन्तु हर एक राष्ट्र में इसकी विधियां और मान्यताएं भिन्न हैं। धर्मशास्त्र बाइबल में नए वर्ष के उत्सव को लैव्यव्यवस्था 23:23-25 पद के अनुसार 'तुरहियों का पर्व' कहा गया है। तुरहियों का पर्व बाद में नए वर्ष के उत्सव में बदल गया। पुराना नियम काल में नए वर्ष उत्सव 'रोश हशनाह' के नाम से प्रचलित हुआ और वर्तमान में भी यह उत्सव का यह 'रोश हशनाह' के नाम से ही जाना जाता है। यह उत्सव यहूदी कैलेंडर के अनुसार 'तिसरी' नामक महीने की पहली तारीख से प्रारंभ होता है। परम्परा अनुसार मेढ़ा की सींग का बना हुआ वाद्य यंत्र 'सोफर' की ध्वनि के साथ इसका शुभारम्भ किया जाता है। नव वर्ष का उत्सव 'रोश हशनाह' का शाब्दिक अर्थ होता है 'वर्ष का सिर' अथवा 'वर्ष का आरम्भ'। यहूदी मान्यता अनुसार इसी दिन परमेश्वर ने आदम को सहायक के रूप में एक जीवन साथी 'हव्वा' को दिया था। इसीलिए नव वर्ष का उत्सव आदम और हव्वा के मिलन की 'सालगिरह' या वर्षगांठ के रूप में भी माना जाता है। यह उत्सव एक अर्थ में संसार का जन्म दिवस का उत्सव है अर्थात् यह मानवता का पर्व है। लैव्यव्यवस्था 23:24,25 और गिनती की पुस्तक के 29:1-6 पद तक वर्णन के अनुसार यह उत्सव आराधना और भक्ति भावना में रहकर मनाने को कहा गया है। परन्तु धर्मशास्त्र के आदेश का पालन न करते हुए वर्तमान में नव वर्ष का उत्सव सिर्फ मौज मस्ती मनाने का उत्सव हो गया है। विशेष कर युवा वर्ग धर्मशास्त्र की बातों को भुलाकर पिकनिक का आयोजन करते हैं और पूरा उत्सव सिर्फ मौज मस्ती में मनाते हैं। नव वर्ष के इस अवसर पर जवानों को चेतावनी देते हुए वचन कहता है सभोपदेशक ग्यारहवें अध्याय के नौवें पद में, ''हे जवान, अपनी जवानी में आनन्द कर और अपनी जवानी के दिनों में मगन रह, अपनी मनमानी कर और अपनी आंखों की दृष्टि के अनुसार चल। परन्तु यह जान रख कि इन सब बातों के विषय परमेश्वर तेरा न्याय करेगा।'' इस्राएलियों के जीवन में इस उत्सव को मनाने के पीछे परमेश्वर का उद्देश्य था कि लोग इस अवसर पर अपने जीवन की कमियों की जांच पड़ताल करेंगे। और आने वाले वर्ष में अपना सुधार करने का संकल्प लेंगे अर्थात् यह उत्सव जीवन में सही निर्णय लेने का उत्तम अवसर होता है। परन्तु यह कितनी दुखद स्थिति है कि वर्तमान युग में आधुनिकता की दौड़ में अंधे युवा वर्ग नए साल के उत्सव में सबसे ज्यादा अपराध कर्म कर बैठते हैं। इस नव वर्ष के उत्सव पर जवानों को परमेश्वर चेतावनी देते हुए सावधान करता है और चिंतन करने के लिए प्रेरित करता है:- ''अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख, इससे पहले कि विपत्ति के दिन और वे वर्ष आएं, जिनमें तू कहे कि मेरा मन इनमें नहीं लगता'' (सभोपदेशक 12:1)।

बाल्यावस्था और प्रौढ़ अवस्था के बीच की अवस्था मानव जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था होती है जिसे हम जवानी कहते हैं। जवानी की अवस्था एक खिले हुए फूल की तरह सुन्दर आकर्षक और सर्वप्रिय होती है। मनुष्य का जीवन एक यात्रा है जो जन्म के साथ शुरू होती है और मृत्यु के साथ अन्त होती है। जवानी हमारी जीवन यात्रा का मध्य ठहराव होता है जहां चारों तरफ अनेक मोड़ दिखाई पड़ते हैं। और जवानी के इसी ठहराव पर एक जवान को अपने जीवन के अहम फैसले लेने पड़ते हैं। उचित अनुचित का निर्णय करके अपने आगे की यात्रा प्रारम्भ करने की आवश्यकता होती है। ऐसे महत्वपूर्ण पड़ाव पर पहुंचे हुए जवानों के लिए धर्मशास्त्र बाइबल एक मार्गदर्शक की हैसियत से कुछ सुझाव प्रस्तुत करती है जो सभोपदेशक 12:1 पद में बताया गया है। इस पद में हमें चार बातें सीखने को मिलती है:-

1. जवानी के दिन : मनुष्य के जीवन में 'जवानी के दिन' एक ऐसा स्वर्णिम अवसर बन कर आता है जिसे तीन प्रकार की शक्तियां अपने लिए इस्तेमाल करने की इच्छुक होती है।

(क) पहली शक्ति है दुष्टता के संसार की शक्ति अर्थात् शैतान की शक्ति। शैतान सबसे ज्यादा जवानों को प्यार करता है और वह प्रत्येक जवान को अपनी ओर खींचता है। किसी जवान को खींचने के लिए शैतान के पास अनेकों चुम्बकीय शक्तियां

आत्मिक भोजन

9 जनवरी **आत्मिक आंखें** **मत्ती 20:29-34**

संसार ऐसे लोगों से भरा पड़ा जो किसी ना किसी रूप से दिव्यांग हैं अर्थात् कोई शारीरिक त्रुटि या कमी उनमें पाई जाती है। उदाहरण के लिये एक नेत्रहीन व्यक्ति कितना असहाय है और यदि उसे नेत्रदान मिल जाये तो वह कितना सौभाग्यशाली होगा। नेत्रदान तो महादान है। प्रिय मित्र, वचन के इन पदों के द्वारा यह शिक्षा मिलती है कि प्रभु हमारी आत्मिक आंखों को भी खोल सकते हैं। इस अन्धे व्यक्ति ने नेत्रदान पाकर प्रभु को ग्रहण किया और उसका अनुयायी भी बन गया।

प्रार्थना - हे प्रभु, मेरी आत्मिक आंखों को खोल दें।

जिनके द्वारा वह जवानों को खींचता है। जैसे-धन का आकर्षण इतना अधिक शक्तिशाली होता है कि वह धार्मिकता से जुड़े व्यक्ति को भी नहीं छोड़ता। 2 राजा 5:21,22 में कहा गया है कि भविष्यवक्ता एलीशा के साथ हमेशा रहने वाला युवक गेहजी ने धन के आकर्षण में खिंच कर जीवन भरके लिए कोढ़ का श्राप कमा लिया। शैतान का एक चुम्बकीय शक्ति है 'वासना' जिसके आकर्षण से अनेकों युवक नाश हो रहे हैं। न्यायियों की पुस्तक में सोलवें अध्याय के युवक शिमशोन का जीवन वासना के कारण नष्ट हो गया।

(ख) दूसरी शक्ति है 'राष्ट्र शक्ति'। इसलिए कहा जाता है कि राष्ट्र शक्ति युवा शक्ति। सरकार भी जवानों को ही चाहती है, जवानी के दिन पार हो जाने पर सरकार कोई भी जॉब नहीं देती और नौकरी में लगे हुए सरकारी कर्मचारियों को भी जवानी के दिन समाप्त होने पर उन्हें सेवा निवृत्त कर दिया जाता है।

(ग) तीसरी शक्ति है 'स्वर्गीय शक्ति'। परमेश्वर के यहां भी सेवा के लिए जवानों की ही बुलाहट होती है। सुसमाचार प्रचार के काम के लिए, पास्तरीय सेवा के लिए, मिशनरी सेवा के लिए या किसी अन्य सेवा के लिए जवानों की ही मांग होती है। प्रभु यीशु की सेवा में बारह शिष्य भी जवान थे, और पौलुस भी स्वयं एक जवान था तथा उसने अपनी मिनिस्ट्री में तीमुथियुस, तीतुस जैसे जवानों को ही नियुक्त किया। इसलिए जवानी के दिन बहुत महत्वपूर्ण माने जाते हैं क्योंकि सब जगह जवानो की ही मांग होती है।

2. सृजनहार को स्मरण रख :- इस वाक्य में दो बातें ध्यान देने योग्य हैं-पहली बात है, सृजनहार और दूसरी बात है, स्मरण रखना। सृजनहार शब्द परमेश्वर का एक पवित्र नाम है। यह नाम परमेश्वर का इसलिए है क्योंकि उसने हमारी सृष्टि की, भजन संहिता 100:3 में कहा गया है कि '...हम उसी के हैं, में कहा गया है कि, ''...उसी ने हमको बनाया, और हम उसी के हैं।'' ...एक गहन अर्थ प्रकट करता है अर्थात् इसका मतलब यह है कि हम उस सृष्टिकर्ता परमेश्वर की निजी सम्पत्ति हैं, इसलिए हमारे सम्पूर्ण जीवन पर सिर्फ उसी का अधिकार है। इसलिए संत मरकुस ने अपने सुसमाचार में 12:30 पद में कहा है, '...तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।'' परमेश्वर को स्मरण रखने का मतलब यह है कि उसकी आज्ञाओं को मानना, उसके मार्ग पर चलना।

3. विपत्ति के दिन :- विपत्ति के दिन का एक अर्थ है जीवन के बुरे दिन। जिन्दगी का ढलता सूरज बुढ़ापे की संध्या काल माना जाता है। जीवन का यह अंतिम पड़ाव अत्यन्त दुखद होता है। इस अवस्था में शरीर की सभी इन्द्रियां शिथिल पड़ जाती हैं। सुनने की क्षमता, देखने की क्षमता, सोचने की क्षमता, चलने फिरने और परिश्रम करने की क्षमता क्षीण होकर शरीर शक्तिहीन हो जाता है। रोग बीमारी का प्रकोप बढ़ जाता है और जीवन बहुत ही कष्टकारक हो जाता है। इसलिए सभोपदेशक का लेखक हमें सिखाता है कि जीवन की जवानी अवस्था मौज मस्ती की नहीं है, बल्कि बुढ़ापे की अवस्था में आनेवाले विपत्ति के दिनों में खुश रहने के लिए आत्मिक तैयारी के दिन होते हैं-हमारी जवानी के दिन। जवानों को परामर्श दिया जाता है कि बुजुर्ग अवस्था आने से पहले ही जवानी में अपनी तैयारी कर लो। अभी जवानी में ईश्वर को याद कर लो क्योंकि बुढ़ापे में स्मरण नहीं होता, न आराधना हो पाती, न प्रार्थना हो पाती। अभी अवसर मिला है फिर दुबारा नहीं मिलेगा। भजन संहिता 106 21 में वचन कहता है कि 'वे अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को भूल गए' और भजन संहिता के 9:17 में कहा गया है कि परमेश्वर को भूलने वाले अधोलोक में डाले जाएंगे। जवानी के दिन मनुष्य के जीवन में परमेश्वर की ओर से उपहार स्वरूप होते हैं अर्थात् परमेश्वर से मिला हुआ ऐसा अवसर होता है जब अपने जीवन को संवारा जाता है। यदि इस अवसर को मौज मस्ती में खर्च कर डाला तो भविष्य बिगड़ जाता है। इसलिए सभोपदेशक का लेखक हमें सचेत करता है कि जवानी के दिनों में ही ईश्वर से जुड़ जाओ।

4. मन नहीं लगता :- मनुष्य के शरीर में दस इंद्रियां पायी जाती हैं, परन्तु दसों इन्द्रियों के अतिरिक्त एक ग्यारहवीं इन्द्रीय 'मन' है। और यही मन दसों इन्द्रियों पर शासन करता है। मन जब आदेश देता है, तब इन्द्रियां अपना कर्म करती हैं, परन्तु यदि इन्द्रियां बीमार होकर दुर्बल हो जाय तो फिर मन किसे आदेश करे? इन्द्रियां शिथिल होने पर 'मन' आदेश देना बन्द कर देता है, जीवन में ऐसी स्थिति आने पर इनसान कहता है, अब मेरा मन इनमें नहीं लगता। बुढ़ापे के कारण शरीर दुर्बल हो गया, इसलिए आराधनालय नहीं जा सकते, क्योंकि अब पैर कांपते हैं, घर में

आत्मिक भोजन

10 जनवरी **हमारा मन** **एज्रा 7:10**

मानवीय मन मनुष्य की सारी क्रिया कलापों का केन्द्र है। हम जिस बात को सोचते एवं विचार करते हैं वही हमारे जीवन में कार्यरूप में संपादित भी होता है। यदि हम परमेश्वर के वचन पर मन लगाते एवं उसे पढ़ते हैं तो हम उसी के अनुसार चलते भी हैं। इसलिये हमारी सारी बातें, सारी गतिविधियों का केन्द्र परमेश्वर और उसका वचन ही होना चाहिये। यदि हम संसार और उसकी बातों पर अपना मन लगायेंगे तो हमारे कार्य भी उसी के अनुसार होंगे।

प्रार्थना - हे प्रभु, मेरा मन आप और आपके वचन पर ही लगा रहे।

टी.वी. पर वचन नहीं सुन सकते, क्योंकि कानों से सुनाई नहीं पड़ता, घर में बैठकर वचन नहीं पढ़ सकते, क्योंकि आंखें धुंधली पड़ गयीं। इसलिए सभोपदेशक का लेखक सुझाव देता है कि, 'जवानों अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण कर लो, क्योंकि एक समय ऐसा आने वाला है, जब तुम कुछ नहीं कर पाओगे अर्थात् अपनी जवानी के दिनों में ही अपना अंत संवार लो, आत्मा के अनन्त निवास की तैयारी कर लो।

आप सभी पाठकों को नव वर्ष की शुभकामनाओं के साथ नए साल की हार्दिक बधाई।

अशियन बहालेन टोपनो
बोकारो, झारखंड

अवसर

आप पाठकगण 'मसीही आह्वान' पत्रिका के लिए दस नए सदस्य बनाकर भेजें और एक साल तक की सदस्यता निःशुल्क प्राप्त करें।

नए सदस्यों का नाम, पूरा डाक पता, पिन कोड और मोबाइल नंबर के साथ लिख भेजें। सदस्यता सहयोग राशि NEFT या मनी ऑर्डर के द्वारा भेज सकते हैं। NEFT की जानकारी पत्रिका के इसी अंक में छपी है। आपसे विनम्र निवेदन है जब भी आप NEFT करें ऑफिस के ईमेल या फोन पर हमें सूचित करें।

व्यवस्थापकीय कार्यालय
मसीही आह्वान
गुड बुक्स बिल्डिंग, दूसरी मंजिल,
मेन रोड, राँची - 834 001 (झारखण्ड)
फोन : 0651- 2331394 • E-mail : masihiahwan@gmail.com

मसीही आह्वान कार्यालय

आप सभी पाठकों को मसीही आह्वान परिवार की ओर से 69वीं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनायें!

आत्मिक भोजन

11 जनवरी **हमारी बातें** **लूका 2:36-38**

आज संचार का युग है, हम मिनटों में संसार के एक कोने से दूसरे कोने तक बात कर सकते हैं। इस मानवीय उपलब्धि के लिये हमें प्रभु को धन्यवाद देना चाहिये। हन्नाह भविष्यद्वक्तिन द्वारा अन्य लोगों से बालक यीशु के विषय बातें करना कितनी रोचक एवं अनुकरणीय है। काश हम सभी की बातों का केंद्र प्रभु और केवल प्रभु यीशु ही होता। यीशु के शिष्य तो जीवन भर सुसमाचार के विषय में बोलते रहते थे। तब क्या आज ख्रीस्त के जन्म की गाथा, उसके बलिदान की गाथा हम सबकी बातों का केन्द्र ना हो?

प्रार्थना - हे प्रभु, आपके जन्म, त्याग, बलिदान की बातें हम सदा दूसरों के साथ करते रहें।

बच्चो, रंग भरो और पहचानो कि यह चित्र बाइबल के किस दृश्य को दर्शाता है।

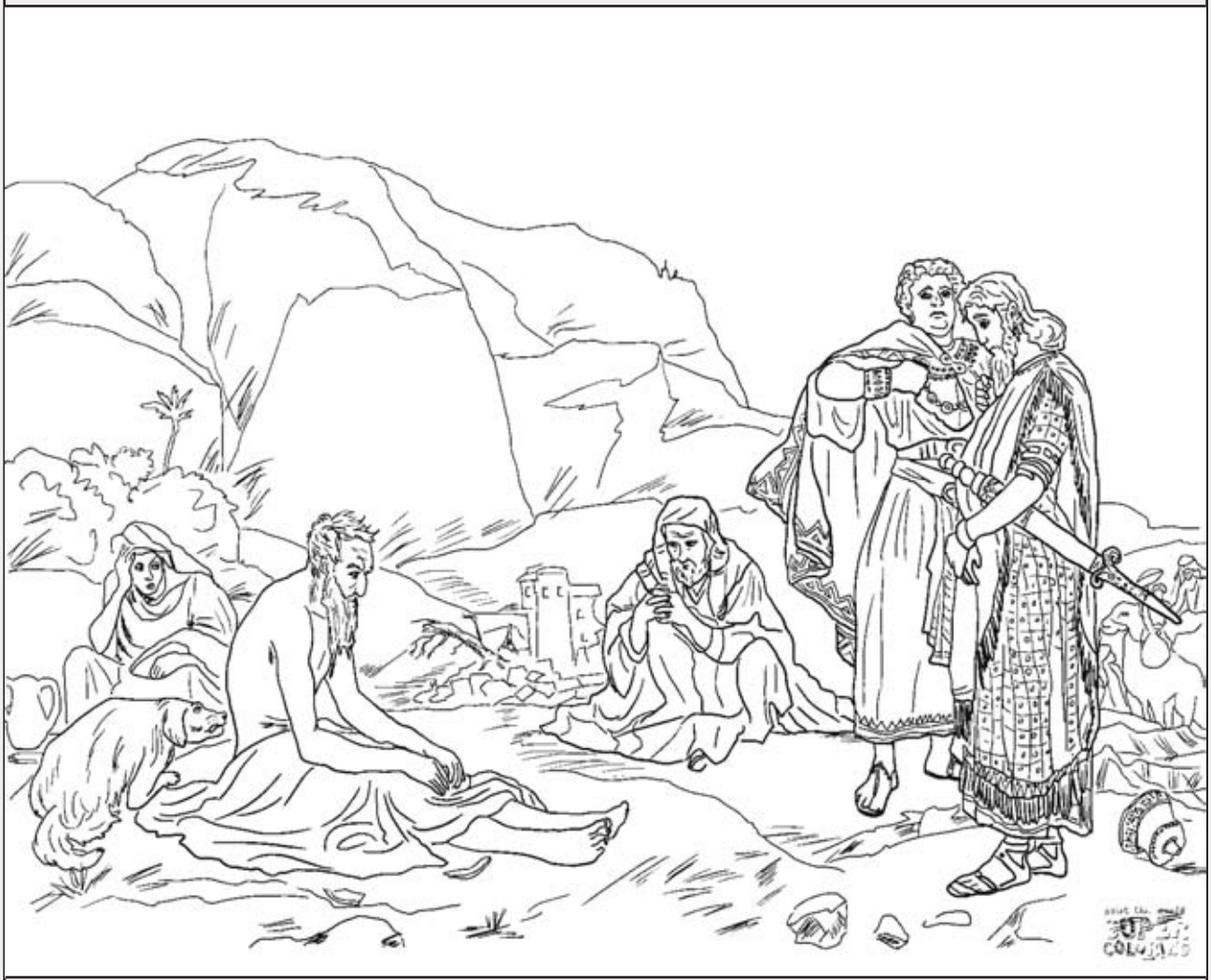

जब तेमानी एलीपज, और शूही बिलदद, और नामाती सोपर, अय्यूब के इन तीन मित्रों ने इस सब विपत्ति का समाचार पाया जो उस पर पड़ी थीं। तब वे आपस में यह ठानकर कि हम अय्यूब के पास जाकर उसके संग विलाप करेंगे ,और उसको शांति देंगे, अपने अपने यहां से उसके पास चले। जब उन्होंने दूर से आंख उठाकर अय्यूब को देखा और उसे न पहचान सके, तब चिल्लाकर रो पड़े(और अपना अपना बागा फाड़ा और आकाश की ओर धूल उड़ाकर अपने अपने सिर पर डाली।

(अय्यूब 2:11,12)

आत्मिक भोजन

12 जनवरी **नेक शिक्षा** **नीतिवचन 3:1-4**

शिक्षा चाहे शैक्षणिक या आध्यात्मिक हो यह जीवन को ऊंचा ही उठाती है और चरित्र का निर्माण करती है। शिक्षा चरित्र की खूबसूरती को बढ़ाती है। वचन के प्रकाश में आज यह एक बड़ी जरूरत है कि ना केवल नवयुवक पर हम सभी नेक, शैक्षणिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा के मूल्य को जानें। यह आयुवर्द्धक है तथा मनुष्य और ईश्वर दोनों के अनुग्रह का विशाल स्रोत है।

प्रार्थना – हे प्रभु, जीवन निर्माण के क्रम में शिक्षा के महत्व को कभी नजरअंदाज ना करूं।

क्रिसमस यानि बड़ा दिन जब आता है तो किस मसीही को खुशी नहीं होती। यहां तक कि कई गैर मसीही भी क्रिसमस सेलिब्रेट करते हैं। वे बच्चों के लिए केक, कैन्डल्स खरीदते हैं और क्रिसमस-ट्री घर में सजाते हैं। क्रिसमस त्योहार ही ऐसा है आनंद और खुशियों को लुटाता और प्रेम के मसीहा अर्थात् प्रभु यीशु मसीह के संदेश को प्रसारित करता हुआ। चाहे कोई मसीही व्यक्ति अमीर हो या गरीब सब अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार क्रिसमस सेलिब्रेट करते हैं।

पीटर सिंह रिक्शा चालक है। अन्य रिक्शेवाले की तरह लड़ता-झगड़ता और धूम्रपान व शराब का सेवन नहीं करता। कभी किसी सवारी से हील-हुज्जत नहीं करता। प्रेमपूर्वक उनके गंतव्य तक पहुंचाता है। तीन बच्चे हैं उसके। बड़ी बेटी नैन्सी, उसके बाद दो लड़के-डेनिस और सन्नी। तीनों बच्चे मसीही विद्यालय में पढ़ते हैं। पीटर की पत्नी लवीना बहुत मेहनती स्त्री है। पहले वह कई घरों में झाड़ू पोंछा, बर्तन धोना आदि काम करती थी पर अचानक पीटर की पत्नी बीमार हो गई। न काम में मन लगता न परिवार संभाला जाता। बेचारा पीटर परेशान हो गया। रात दिन मेहनत करने के बाद भी इतना ही मिल पाता कि दो वक्त की रोटी ही नसीब हो। अब पत्नी का कामकाज तो ठप्प हो गया। ऊपर से उसकी दवाइयों का खर्च बढ़ गया।

पीटर की बड़ी बेटी नैंसी पढ़ने में बहुत होशियार है। मिशन स्कूल में पढ़ रही है। शाला के प्रधानाचार्य जसवंत जेकब भले व्यक्ति हैं। उन्होंने नैन्सी की स्कूल की फीस माफ करने के साथ-साथ स्कूल यूनिफार्म, बुक्स व नोट बुक्स शालाकोष से ही उपलब्ध करवा दी। मिसेज सोसन जेकब जसवंत जेकब की वाइफ उसी शाला में साइंस की टीचर है। 9 से 12वीं तक की क्लासेस में साइंस पढ़ाती हैं। नैन्सी की योग्यता देखते हुए उसे वे शाम को फ्री टयूशन भी देती हैं। उस दिन पीटर किसी टीचर को स्कूल तक लाया था रिक्शे में। प्रिंसिपल साहब बाहर ग्राउंड में ही दिख गए। पीटर ने उन्हें टाइम विश किया।

''कैसे हो पीटर?''

''प्रभु की और आप बड़े लोगों की कृपा है।''

वे मुस्कुरा कर बोले, ''नहीं पीटर हम सब उसी परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह की कृपा से जीते हैं। तुम्हारी बिट्टिया बहुत अच्छे से पढ़ रही है। देखो उसे डॉक्टर बनाना। वो जरूर 12वीं के बाद पी.एम.टी. क्लीयर कर लेगी। वो बहुत जीनियस यानि जहीन है, होशियार है।''

बेबसी से पीटर ने कहा ''मुझ जैसा गरीब आदमी जो दो वक्त की रोटी का जुगाड़ भी मुश्किल से कर पाता है अपनी बिटिया को डॉक्टर बनाने का क्या सपना देखेगा?''

''अरे नहीं पीटर हौसले हों तो मंजिल मिल ही जाती है। हम उस परमेश्वर पर विश्वास करते हैं जिसके द्वारा सब कुछ संभव है। बस तुम्हें बेटी को डॉक्टर बनाना है यह मन में ठान लो।''

''वो तो ठीक है साहब पर मेरी पत्नी भी बीमार है दिन रात खांसती है बहुत कमजोर हो गई। डॉक्टर ने टी.बी. की शुरूआत बताई है। कहां से लाऊं इतना पैसा। दिन रात यही सोचता रहता हूं। फिर अब क्रिसमस और नया साल भी आने को है। बच्चों को नये कपड़े और जूते भी चाहिए। जूते फिर घर में कुछ पकवान, केक भी करना पड़ेगा, हम गरीबों के लिए क्या त्योहार साहब?'' कहते हुए पीटर का गला रूंध गया।

प्रिंसिपल जेकब ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा ''सब ठीक होगा। अपने परमेश्वर पर विश्वास रखो...वचन में लिखा है प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा था तुम विश्वास रखोगे तो परमेश्वर द्वारा किए गए बड़े-बड़े काम देखोगे। हिम्मत मत हारो। फिर थोड़ा कुछ सोचते हुए कहा - सुनो हमारे स्कूल में नाइट वॉचमैन की नौकरी है। अधिक कुछ नहीं करना है बस स्कूल में सोना है और रात को एक दो बार टॉर्च लेकर स्कूल परिसर में राउंड लगा लेना है इसके लिए तुम्हें दस हजार रुपये मिलेंगे और अन्य सुविधाएं भी। मैं चाहता हूं तुम इस नौकरी को करो। दिन में तुम अपना रिक्शा चला सकते हो।''

पीटर को यह जॉब ऑफर अच्छी लगी और उसने अपनी

आत्मिक भोजन

13 जनवरी **परमेश्वर की दृष्टि** **यिर्मयाह 29:11**

सृष्टिकर्ता परमेश्वर हमारे पिता हैं। वह हमारी चिन्ता करते हैं। हमारे जन्म लेने से पहले ही हम पर परमेश्वर की दृष्टि थी वैसे ही वह हम सब पर नजर रखते हैं, उन्हें हमारा ध्यान है हमारी चिंता है। प्रभु ने स्वयं ही कहा है ''मेरी कल्पनायें तुम्हारे हानि की नहीं पर लाभ ही की है।''

प्रार्थना - हे प्रभु, गर्भ में रचे जाने से पूर्व मेरा ध्यान रखने एवं चिंता करने के लिये आपका धन्यवाद करता रहूं।

स्वीकृति दे दी। रात को रिक्शा चलाकर बामुश्किल सौ रुपये कमा पाता था और फिर कई बार इतना भी नहीं। लोग ऑटो में अधिक पैसे देकर जाना पसंद करते हैं बजाय रिक्शे से जाने के।

पीटर अब दिन को रिक्शा चलाता और रात को मिशन स्कूल में चौकीदारी का काम करता। काम तो दोहरा हो गया था पर उसकी आय अच्छी हो गई थी। इधर प्रिंसिपल जेकब के सहयोग से उसकी पत्नी के इलाज की व्यवस्था भी अच्छे हॉस्पिटल में हो गई। गरीबी रेखा से नीचे (बी.पी.एल.) होने के कारण अति साधारण शुल्क पर लवीना का इलाज होने लगा।

यह प्रथम बार था कि क्रिसमस व नया साल जैसे महत्वपूर्ण त्योहार आ रहे थे और पत्नी घर पर नहीं थी। कहते हैं मनुष्य जिसकी कल्पना भी नहीं करता उसकी परमेश्वर व्यवस्था कर देता है वह अपने भक्तों की सुधि रखता है। पीटर की एक चचेरी बहन बरथा मानस गांव में रहती थी। उसका पति सरकारी दफ्तर में पियून था। उसकी अकाल मृत्यु हो गई। बरथा भी एन. ए.एम. थी और उन्हीं दिनों उसका तबादला उसी शहर राजनांदगांव में हो गया जहां पीटर था। पीटर ने सहर्ष अपनी बहन को अपने घर में आश्रय दे दिया।

बरथा ने भी आते ही पीटर के बच्चों के देखरेख की जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली। प्राय: वह अपनी भाभी लवीना की भी हॉस्पिटल में देखभाल कर आती। बरथा के पति की मृत्यु पश्चात् जो पैसा मिलना था उसने सोच लिया कि वह अपने भाई के परिवार और उसके बच्चों पर ही खर्च करेगी। यद्यपि बरथा के ससुराल वाले यानि जेठ व देवर उसके पति का पैसा हड़प लेना चाहते थे, पर बरथा के अटल इरादे के सम्मुख उनकी एक न चली।

क्रिसमस आया। पीटर को स्कूल से दो दिन की छुट्टी मिल गई थी। यह पहला अवसर था जबकि लवीना घर पर नहीं थी। वह हॉस्पिटल में थी। अब पहले से उसके स्वास्थ्य में सुधार था। खांसी पर पूर्ण नियंत्रण था तथा चेहरे पर अब भी रौनक थी। चर्च सर्विस समाप्ति के बाद पीटर, बरथा और बच्चे फुरती से हॉस्पिटल चले गए। लवीना उन सबको देखकर फूट-फूट कर रो उठी। बच्चे भी मां से लिपटकर खूब रोए। पीटर ने अपनी आंखों से आसूं पोंछते हुए बच्चों से कहा, ''आज खुशी का दिन है बच्चों! प्रभु यीशु का जन्मदिवस है, आज खुश होने, मुस्कुराने और हर्षित होने का दिन है... इसके अलावा खुश होने का एक और भी कारण है और वह यह कि तुम्हारी प्यारी मां अब पहले से बहुत अच्छी है। डॉक्टर कह रहे हैं कि कुछ ही दिनों में वह घर आ सकेंगी। चलो मां को क्रिसमस का केक खिलाओ और आसपास और जितने मरीज हैं उनको भी केक-मिठाई खिलाओ।''

बच्चों ने पहले मां को फिर अन्य लोगों को जो वार्ड में थे उनको केक खिलाया।

तभी नैन्सी की दृष्टि वार्ड के आखिर में एक छोटे बच्चे पर पड़ी। वह बीमार था और अकेला था। वह उसके पास गई। ''तुम बहुत उदास नजर आ रहे हो? क्या नाम है तुम्हारा और तुम्हें क्या हुआ? तुम्हारे पास कोई नहीं है देखभाल के लिए?'' तभी नर्स आ गई। नैन्सी ने पूछा, ''नर्स इस बच्चे को क्या हो गया है?''

''बच्चों इस 7 वर्ष के बच्चे को एक्यूट एस्थमा है। परसों रात ही इसे एडमिट कराया गया है। अब यह पहले से काफी बेहतर है।''

''इसके पास कोई नहीं है क्या?''

''इसके मां-बाप दिहाड़ी मजदूर हैं। सुबह होते ही काम पर चले जाते हैं। हां इसकी बूढ़ी दादी इसके पास रहती है, पर अभी वह घर गई हुई है इसके धुले कपड़े और कुछ जरूरी सामान लेने।'' तीनों बच्चों को उस पर बड़ी दया आई। तभी उनकी बुआ बरथा भी वहां आ गई और उस बच्चे के बारे में जानने के बाद उन्होंने बच्चों से कहा, ''आज क्रिसमस डे है, अपने खिलौने और नए कपड़े, जूते जो खरीदे हैं इसे लाकर दे दो, मैं और दिलवा दूंगी। बच्चे जो अपनी मां को दिखाने के लिए अपनी चीजें लाए थे उन्होंने खुशी-खुशी उस बच्चे को गिफ्ट कर दिए। वह बच्चा इन्हें पाकर बहुत खुश हो गया और मुस्कुरा कर धीरे से बोला, ''धन्यवाद हैप्पी बड़ा दिन !''

जो वार्ड जो कुछ देर पहले सूनेपन से भरा हुआ था। इन सब बच्चों की चहल पहल से जीवंत और आनन्दमय हो उठा।

पूरे सात दिन बार नए वर्ष के दिन डॉक्टर ने पीटर की पत्नी लवीना की छुट्टी हॉस्पिटल से कर दी और दवाइयां देकर घर जाने के लिए कह दिया। वह स्वस्थ हो गई थी, पर अभी पूरी

आत्मिक भोजन

14 जनवरी **महाकरुणा** **विलापगीत 3:22,23**

जीवन और मृत्यु दो शाश्वत चीजें हैं, ये अवश्यंभावी हैं। जन्म और मृत्यु यह चक्र तो चलता ही रहेगा। लेकिन अहम बात यह है कि यदि हम जीवित हैं तो यह प्रभु की महाकरुणा का फल है। वह जीवन और आशीषों को देनेवाला है। यिर्मयाह नबी कहता है, हम मिट नहीं गये यह यहोवा की महाकरुणा है क्योंकि मृत्यु के बाद दैहिक जीवन का अंत हो ही जाता है।

प्रार्थना - हे प्रभु, जीवित रहकर आपका धन्यवाद करता रहूं।

तरह नहीं। लवीना ने डॉक्टर्स और मेडिकल स्टॉफ को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और घर आकर अपनी ननद बरथा का जिसने उसके बच्चों और पूरे परिवार को संभाल लिया था। बरथा ने इस परिवार में आकर अपने भइया-भाभी के बीच अपने पति के गम को भुला दिया था। बरथा की कोई संतान नहीं थी और कई बार वह इस कमी को महसूस करती थी, पर अब इन सुंदर हंसमुख बच्चों के बीच वह बहुत प्रसन्न थी। वह निश्चय कर चुकी थी कि शेष जीवन वह इसी परिवार में गुजारेगी। नैन्सी और दोनों बच्चों से उसने कहा ''तुम जितना पढ़ना चाहो पढ़ो और जिन्दगी में आगे बढ़ो ताकि तुम्हें दो वक्त की रोटी के लिए न रिक्शा घसीटना पड़े और न घरों में सर्वेन्ट का काम करना पड़े। बस अच्छे विश्वासी मसीही बनो और यीशु पापा से डरो और उस पर विश्वास करो।''

इस बार का नया साल पीटर और उसके पूरे परिवार के लिए नए साल की अद्‌भुत सौगात लेकर आया था। ❑

अरनी रॉबर्ट्स
राजस्थान

यीशु ही सच्चा डगर

यीशु जब सच्चा डगर है
फिर काहे का डर है ।।2।।
अरे हमको काहे का डर है
अरे तुमको काहे का डर है
अरे इनको काहे का डर है

1. **उसका आना भी मेरे लिए था**
   उसका जाना भी मेरे लिए है ।।2।।
   फिर से आना भी मेरे लिए होगा ।

2. **उसका जीना भी तेरे लिए था**
   उसका मरना भी तेरे लिए है ।।2।।
   फिर से जी उठना भी सबके लिए होगा ।

3. **फिलिप्पी 4:4 को याद रखूंगा**
   प्रभु में सदा आनन्दित रहूंगा ।।2।।
   फिर से कहता आनन्दित रहूंगा ।

बिनोद कुमार कुजूर
निदेशक साक्षी ग्रुप म्यूजिक मिनिस्ट्री
गीत - मसीही ऑडियो एलबम (सच्चा डगर)
धनबाद, झारखण्ड

आत्मिक भोजन

15 जनवरी **तेजस्वी रूप** **2 कुरिन्थियों 3:17,18**

परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप और समानता में बनाया था। वचन पर गौर करें ''आओ हम मनुष्य को अपने स्वरूप और समानता में बनायें।'' सचमुच मानव शरीर एक कलात्मक कार्य है, एक विस्मयकारी जटिल प्राणी जिसे केवल परमेश्वर की बुद्धि ही आकार दे सकती थी और परमेश्वर की सामर्थ ही रच सकती थी। प्रिय मित्र, प्रभु आत्मा है और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है साथ ही प्रभु की उस आत्मा के द्वारा हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जा रहे हैं। यह इस संसार की एवं आनेवाले संसार अर्थात् स्वर्गधाम की सबसे बड़ी आशीषित एवं सौभाग्यशाली बात है।

प्रार्थना - हे प्रभु, हमें अंश अंश करके अपने तेजस्वी रूप में बदलने के इस पावन कार्य के लिये आपका आभारी बना रहूं।

THE ORION'S SCHOOL OF ADVENTIST EDUCATION

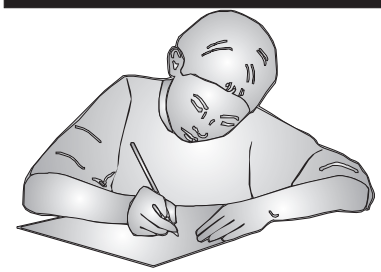

Co-Education English medium School (ICSE pattern)

The Orion's School of Adventist Education is a Christian Educational Institution with hostel facilities with boys and girls. The school admits and encourages children between five years and twelve years of age. The school provides the children with the complete family atmosphere where they love to live learn and develop themselves.

Our special features

- Besides the regular curricular learning activities the school provides the children with the following features.
- Pollution free environment
- Nurtures Christian spirits and cultivate healthy habits, good manners and positive thinking are encouraged.
- Speaking skills and inborn talents and prayerful attitude are nurtured.
- Morning and evening worships strengthens the biblical faith and develops liblical knowledge.
- English speaking environment.
- Dedicated teachers

Campus

The School is situated 15 kilometers from Ranchi on the Ranchi Gumla highway. The Children enjoy 100% narcotic free zone. Only those staff and faculty who practice healthy food habits, good language, spiritually dedicated and have the love for teaching profession are entertained.

Note : The first ten students responding through this advertisement will receive special preference and can avail special discount in their admission charges for the academic session 2018-2019.

Forms for the new academic session 2018-2019 are available from 1st December onwards.

Contact No. : 7209380342, 8002051399, 8210779125

Time : 10.00 am to 10.00 pm)

आत्मिक भोजन

16 जनवरी **प्रभु में** **यूहन्ना 15:5,6**

संत यूहन्ना द्वारा लिखे गये इस सुसमाचार के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि प्रभु और एक विश्वासी का कितना अंतरंग संबंध है। जैसे डाली यदि दाखलता के साथ जुड़ी है तभी उसमें फल लग सकते हैं और यदि वह वृक्ष से अलग है तो वह फलवंत नहीं हो सकती। आज यदि हम विश्वासी हैं लेकिन प्रभु में बने नहीं हैं या उससे अलग हैं, अर्थात् हमारा संबंध प्रभु के साथ नहीं है, तो हम फलवंत और विजयी मसीही जीवन नहीं जी रहे हैं।

प्रार्थना – हे प्रभु, आप में बने रहकर फलवंत एवं आशीषित मसीही जीवन जी सकूं।

नीले आसमां के पार जाएंगे

भाई अमर केरकेट्टा

❀❀❀

नीले आसमां के पार जाएंगे मेरा यीशु रहता वहां,
हम मिलेंगे, बादलों पर देखेगा सारा जहां।

रेव्ह. जुलियस अशोक शॉ

❀❀❀

पुनरुत्थान और परमेश्वर के अनन्त राज्य से जुड़े हमारे प्रभु यीशु मसीह में हमारे विश्वास से बंधा यह खूबसूरत गीत भाई श्री अमर केरकेट्टा 'तृष्ति' एवं 'मसीही आह्वान' के प्रबंधक मंडल के सदस्य रेव्ह. जुलियस अशोक शॉ ने लिखा।

यह बात उन दिनों की है, जब ***'गुड बुक्स एजुकेशनल ट्रस्ट'*** राँची, ने अपना प्रथम लेखन कार्यशाला रांची में ही स्थित ***'विकास मैत्री'*** संस्था में आयोजित की थी। चूंकि गुड बुक्स एजुकेशनल ट्रस्ट की यह प्रथम लेखन कार्यशाला थी, इस कारण समस्त बिहार राज्य से गिने-चुने मसीही लेखकों को आमंत्रित किया गया था।

इस कार्यशाला के दौरान भाई अमर ने बताया कि कार्यशाला में आने से पूर्व वे गिरिडीह (जो अब झारखण्ड में है) में थे। एक सुबह जब उन्होंने आसमान की ओर देखा, तो वे देखते ही रह गए। बहुत ही खूबसूरत नीला रंग। उसी क्षण उन्हें लगा कि हम जो प्रभु यीशु में विश्वास रखते हैं, हमें तो उसी नीले आसमान के पार जाना है। और उनके इस विश्वास ने उन्हें उनके हाथों में कागज और कलम पकड़वा दिया। किन्तु, भाई अमर इस सुन्दर गीत का महज मुखड़ा और पहला छन्द ही लिख पाए।

जो भी हो, भाई अमर ने रांची में आयोजित कार्यशाला के दौरान रेव्ह. शॉ से इस गीत के दूसरे छन्द को लिखने का आग्रह किया। और फिर इस खूबसूरत गीत के दूसरे छन्द को रेव्ह. जे. ए. शॉ ने लिख डाला।

आज यह गीत, ***'नीले आसमां के पार जाएंगे'*** प्रायः सभी कलीसियाओं में गाया जाता है। इतना ही नहीं, अन्य भाषाओं में भी लोगों ने अनुवाद करके इसे गाना प्रारंभ कर दिया है। किन्तु, बहुत ही कम लोगों को इस गीत के गीतकारों का पता है। बैपटिस्ट चर्च ऑफ बिहार ने भी अपने गीत-पुस्तक में इस गीत को सम्मिलित कर रखा है। इस गीत की धुन भी भाई अमर ने ही बनाई। ❑

रेव्ह. डॉ. आर. सी. यादव
लेखक 'मसीही आह्वान' के प्रबंधक मंडल के सदस्य एवं मेथोडिस्ट कलीसिया के पास्टर हैं।
बोकारो, झारखंड।

संसार के सदृश्य न बनो

संसार के सदृश्य न बनो
जब तूने पहचान लिया खुदा को,
जिसने तुझे चुन लिया जग से
तो फिर से वही पुराने कर्म न करो।

कहा है खुदा ने तुम्हें कि
तुम जगत के नूर हो,
बन कर तू नूर जग में रौशनी फैलाते चलो
फिर से अन्धियारे के कर्म न करो।

मिले हैं तुम्हें खुदा से कई वरदान
जिसमें खुद को पहचान कर
सर्वदा उसी की महिमा करो
फिर से अंधियारे के कर्म न करो।

बुराई के बदले किसी से बुराई न करो
नहीं तो क्या फर्क रह जाएगा हममें
इसलिए कहा खुदा ने हमें
''संसार के सदृश्य न बनो''

कीर्ति कुजूर
ईटकी, झारखंड

आत्मिक भोजन

17 जनवरी **आत्मिक युद्ध** **इफिसियों 6:10-13**

फ्रांस और इंग्लैण्ड के मध्य इंगलिश चैनल में होने वाले भयंकर युद्ध के पूर्व इंगलिश नव सेना के सेनापति नेलसन ने कहा था ''महान परमेश्वर महान विजय प्रदान कर'' युद्ध के अंत में विजय इंग्लैण्ड की ही हुई। प्रिय मित्र, शैतान को हराना आसान नहीं लेकिन हम महान परमेश्वर से महान विजय की प्रार्थना तो कर ही सकते हैं। मसीही जीवन के संग्राम में विजय आज उसी की होगी जो परमेश्वर और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवंत होगा।

प्रार्थना - हे प्रभु, हम आपके द्वारा प्रदान किये गये आत्मिक हथियारों से शैतान को हरा सकें।

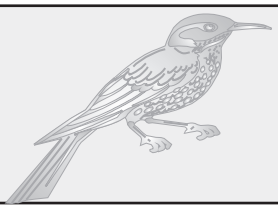

सुनहरी पतंग

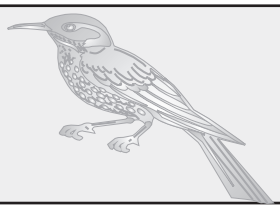

नीले स्वच्छ आकाश में सूरज की किरणों से सुनहरी पतंग
ऐसे चमक रही थी
मानो दिन में कोई तारा चमक रहा हो।
बच्चो,
यह कहानी इसी सुन्दर सुनहरी पतंग की है,
आओ कल्पना की उड़ान भरते हुए
हम भी उस सुनहरी पतंग के पास पहुंचे और उसकी बातें सुने...
खुशी से झूमते नाचते और कलाबाजियां खाते सुनहरी पतंग
अपने मालिक की आज्ञानुसार उड़ी जा रही थी।
आज वो बहुत खुश थी क्योंकि इतनी ऊंचाई पर पहली बार आयी थी।
उसी समय चिड़ियों का झुंड़ सुनहरी पतंग के पास आया।
पतंग ने हंसते हुए चिड़ियों का अभिवादन किया।
'नमस्ते' सुनहरी पतंग ने कहा।
'नमस्ते सुन्दर पतंग' चिड़ियों ने जवाब दिया
'इतनी ऊंचाई पर आने में तुम्हें कैसा लग रहा है' ..?
एक चिड़िया ने सुनहरी पतंग से पूछा
'बहुत अच्छा लग रहा है' प्रसन्नता से सुनहरी पतंग ने कहा'
'देखो वो हरे हरे पेड़ कितने छोटे दिख रहे हैं जैसे कोई पौधे हों..'
'हां' चिड़िया ने नीचे देखते हुए कहा
'और उस नदी को देखो' पतंग ने एक ओर इशारा करके कहा
'आहा, कितनी सफेद दिख रही है, ऐसा लगता है मानों दूध बह रहा हो'
'और उन पहाड़ों को देखो कितने सुन्दर लग रहे हैं..।'
'सचमुच बहुत सुन्दर लग रहे हैं' चिड़िया ने कहा
'चिड़िया बहन...' सुनहरी पतंग ने चिड़िया से कहा
'क्या मैं रूई के समान सफेद बादलों को छू सकती हूं...?'
'जरूर जरूर... जब तुम और ऊंचा उड़ोगी, तब तुम उन्हें छू सकती हो'
चिड़िया ने पतंग के साथ.साथ उड़ते हुए कहा।
'कितना सुन्दर लगता है... यहां ठंड़ी हवा, सुन्दर दुनिया
पर नीला आकाश' पतंग ने खुश हो कर कहा
'हां सुनहरी पतंग, हम इन सब को देख कर
अपने महान जीवते परमेश्वर की स्तुति करते हैं.
जिसने यह सब बनाया' चिड़िया ने कहा
'सच कहती हो चिड़िया बहन,
परमेश्वर के काम स्तुति करने योग्य हैं।' सुनहरी पतंग ने कहा
'अच्छा, एक बात बताओ सुनहरी पतंग ....?' चिड़िया ने कहा
'क्या...?' पतंग ने पूछा
'क्या तुम्हारा मालिक (पतंग उड़ाने वाला) तुम्हें दिखाई दे रहा है?'
'ऊं.....हूं' पतंग ने नीचे देखते हुए कहा
'नहीं चिड़िया बहन....परन्तु उसकी हर आज्ञा मुझे मिलती है...
देखो...देखो मुझे मेरे मालिक ने गोल चक्कर लगाने को कहा है..
अब मैं जा रही हूं'
'अच्छा सुनहरी पतंग.. नमस्ते फिर मिलेंगे' चिड़िया ने कहा
'नमस्ते चिड़िया बहन' पतंग ने कहा और बाईं ओर मुड़ गयी ।
चिड़िया अपने झुंड़ के साथ आगे बढ़ गयी ।
सुनहरी पतंग एक गोल चक्कर लगाती हुई दाहिनी ओर आयी,
उसके पास, एक दूसरी पतंग उसी की तरह सुन्दर,
नीली, पीली, लाल, हरी कई रंगो की मानों तितली हो, उड़ रही थी।
सुनहरी पतंग ने उसकी ओर मुस्कुरा कर कहा 'नमस्ते रंगीन पतंग'
'नमस्ते' रंगीन पतंग ने बुझे मन से जवाब दिया
'क्या बात है तुम खुश नहीं लगती हो' सुनहरी पतंग ने उसे गौर से देखते हुए कहा
'क्या तुम्हारी तबियत खराब है...?'
'नहीं तबियत तो ठीक है, पर.....मैं कहीं और जाना चाहती हूं' रंगीन पतंग ने कहा
'कहां जाना चाहती हो रंगीन पतंग...?' सुनहरी पतंग ने आश्चर्य से पूछा
'कहीं भी...? अपनी मर्जी से ? जहां मेरा दिल चाहे...?' रंगीन पतंग ने कहा
'उधर देखो..सुनहरी पतंग...उन पक्षियों का देखो,
वहां उन तितलियों को देखो..
वे जिधर उड़ना चाहते हैं, उड़ते है...

आत्मिक भोजन

18 जनवरी **प्रभु की इच्छा** **1 यूहन्ना 2:17**

संसार और इसकी अभिलाषायें असीम हैं। हम जितनी कामना करते हैं, इच्छा करते हैं, वो पूर्ण ही नहीं होती। परमेश्वर का वचन कहता है कि यदि हम सदा बने रहना चाहते हैं तो हमें प्रभु की इच्छा पर चलना होगा। यह भौतिक संसार तो एक दिन खत्म हो जायेगा क्योंकि संसार नश्वर है।

प्रार्थना - हे प्रभु, आपकी इच्छा पर चलते हुए एक दिन आपके स्वर्गीय निवास स्थान में स्थान पा सकूं।

और हम...अपने मालिक के गुलाम हैं, मालिक जैसा चाहता है,
वैसा हमें करना पड़ता है....ये भी कोई जिन्दगी है।'
रंगीन पतंग को गुस्सा आ गया
'देखो बहन रंगीन पतंग, गुस्सा न करो..' सुनहरी पतंग ने कहा
'जरा सोचो, आज हम जो इस ऊंचाई पर उड़ रहीं हैं..,
ये सुंदर दुनिया, ये नीला आकाश देख रहीं है,
ये सब.... हमारे उसी मालिक के कारण ही तो है..
जिसकी दया से हम यहां विचरण कर रहीं हैं..'
'तो क्या...?' रंगीन पतंग ने आवेश से कहा
'जब मैं इस डोर से छूट जाऊंगी...
तब हवा में लहराते हुए जहां चाहूंगी वहां विचरण करूंगी...'
'पर कब तक...?' सुनहरी पतंग ने कहा
'जब तक भी....' रंगीन पतंग ने जवाब दिया
'और उसके बाद क्या होगा...? जानती हो' सुनहरी पतंग ने कहा
'क्या होगा...?' रंगीन पतंग ने बेमन से पूछा।
'जैसे जैसे तुम नीचे आओगी...तो बच्चों का झुंड तुम्हारी ओर बढ़ेगा,
उनके हाथों में कांटों वाली लम्बी सी छड़ी होगी,
वे तुम्हारे पीछे दौड़ेंगे तुम्हे पकड़ने के लिए।
वे तुम्हें कटी हुई पतंग समझेंगे...जिसका कोई मालिक नहीं होता..।
वे तुम्हें लूटेंगे...और हो सकता इसमें...
तुम्हारे चिथड़े चिथड़े हो जाएं।' सुनहरी पतंग ने एक सांस में कहा।
'नहीं.....!' रंगीन पतंग चिल्लायी
'देखो, बहन..रंगीन पतंग..' सुनहरी पतंग ने समझाते हुए कहा
''हमारा अस्तित्व इसी में है कि हम अपने मालिक को खुश रखें,
क्योंकि..उसकी खुशी में हमारी खुशी है..इसलिये..हम उसकी आज्ञानुसार चलें।
फिर हमारा मालिक हमसे कितना प्यार करता है।
जब हम उसके पास वापस पहुंचती हैं..
तब वह हमारे घावों में पट्टी लगाता है
हमें बड़े जतन से रखता है..'
'ये तो तुम ठीक कहती हो सुनहरी पतंग..'
रंगीन पतंग ने सोचते हुए कहा
'पर उस दिन क्या होगा जब हमारा मालिक
हमें दूसरी पतंग से लड़ाएगा..?'
'तब..हम जी जान से अपने मालिक की जीत के लिए लड़ेंगी..,
हम अपनी पूरी ताकत, पूरी हिम्मत उस लड़ाई में लगा देंगी...
और..और...अपने मालिक के लिए..
अपने जीवन का बलिदान भी दे देंगी।' सुनहरी पतंग ने कहा'.....'
'सच कहती हो सुनहरी पतंग' रंगीन पतंग ने मुस्कुरा कर कहा
'तुम्हारे जैसी बहन को पा कर, आज मैंने बहुत कुछ सीखा है
अब मैं अपने मालिक की आज्ञानुसार ही चलूंगी...।'
'अच्छा मेरा मालिक मुझे नीचे बुला रहा है...
मै चलती हूं नमस्ते, प्यारी सुनहरी पतंग..'
'नमस्ते बहन रंगीन पतंग...' सुनहरी पतंग ने कहा
और रंगीन पतंग को नीचे जाते हुए देखने लगी....।
बच्चों
इस कहानी में हम अपने आप को देखें...
हम बच्चे और बड़े सभी मनुष्य, एक पतंग के ही समान है,
और हमारा मालिक सर्वशक्तिमान स्वर्गीय पिता परमेश्वर है ।
पतंग की डोर हमारा उद्धारक प्रभु यीशु मसीह है
जो हमारे जीवन को नियंत्रित करता है ।
जो हमें हर खतरों से बचाता है ।
जो हमारी रक्षा करता है ।
प्यारे बच्चो,
जब तक प्रभु यीशु हमारे जीवन में है..
हम अपने स्वर्गीय पिता परमेश्वर से जुड़े रहेंगे..
प्रभु यीशु मसीह की आज्ञाओं को मानना ही हमारा जीवन है
नहीं तो हम भी कटी हुई पतंग के समान हो जाएंगे
और दुनिया में भटकते फिरेंगे और शैतान हमें लूट लेगा...।

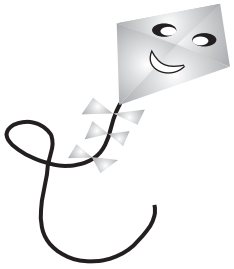

समाप्त

रंजीत चौहान
सेवानिवृत इंजीनियर हैं जो प्रभु की सेवा आत्मिक संदेश लेखन, एवं गीतों को गाने के द्वारा कर रहे हैं।

आत्मिक भोजन

19 जनवरी **शान्ति का राज्य** **मीका 4:2-4**

आज संसार में चारों तरफ अशांति और अराजकता का माहौल है। एक देश दूसरे देश से लड़ रहे हैं। पड़ोसी देश भी आपस में लड़ रहे हैं। प्रिय मित्र, 1919 एवं 1945 में राष्ट्रसंघ एवं संयुक्त राष्ट संघ की स्थापना हुई ताकि विश्व में शान्ति, अमन, चैन और न्याय स्थापित हो। आज यदि लोग परमेश्वर की आदर्श व्यवस्था के अन्दर आयें या इसे अपने यहां लागू करें तो वह दिन दूर नहीं जब विश्व से हिंसा, युद्ध, लड़ाई और झगड़े समाप्त हो जायेंगे। आज जरूरी है कि हर देश, हर राष्ट्र अपने परमाणु हथियारों के भण्डारों को नष्ट करें। आपसी मेल-मिलाप और शांति की खोज करें।

प्रार्थना - हे प्रभु, आपकी इस सुन्दर सृष्टि से हिंसा, युद्ध, अन्याय, अत्याचार का अंत सदा के लिये हो।

सिंहों की मांद

दानिएल 6:16 – ''...और दानिएल सिंहों की मांद में डाल दिया गया।''

हम सभी ने इस अध्याय को बहुत बार पढ़ा होगा या बहुत बार दानिएल के विषय में प्रचार के वक्त वक्ताओं से बातें सुनी होंगी। यदि हम जन्म से ईसाई हैं तो यह बात हम संडे स्कूल की शिक्षाओं में भी बहुत बार पाएंगे कि दानिएल को राजा ने सिंहों की मांद में डलवा दिया था।

पर इसे महसूस सिर्फ वही मनुष्य या इंसान कर सकता है, जो इस परिस्थिति से गुजर रहा हो या गुजरा हो! अब बात यह नहीं है कि हमें सचमुच में किसी ऐसे गुफा में जाकर देखना होगा जिसमें बहुत सारे सिंह हों। ऐसा करना बेवकूफी ही होगी। हालांकि, दानिएल के साथ सचमुच यह घटना घटित हुई थी।

अब आप, एक बात को अपने मन में इस वक्त सोचें कि अभी आप एक ऐसी जगह में पहुंच गए हैं, जहां पर आपके सामने सचमुच के शेर या सिंह मौजूद हों। पिंजड़े के अंदर नहीं, बल्कि बिलकुल आपके पास, 3-4 फीट की दूरी पर आपके आस पास वे घूम रहे हों, अपनी गुर्राहट के साथ आपकी ओर देखते हुए, ऊपर से मानो वे भूखे भी हों। और यह बात आपको अच्छी तरह पता हो, तो आप शायद उस चीज को सोचने से भी कतराएंगे या उस बात को आगे सोचना मुनासिब नहीं समझेंगे।

हमें इस बात पर गौर करना उचित होगा कि यह बात कब किसी के जीवन में होती है? हम देखते हैं कि दानिएल कब इस परिस्थिति से गुजरा। बाइबल (दानिएल 6:1-16) में बताती है, दानिएल अपने कार्य को बिलकुल स्पष्टता से करता था और बिना किसी गलती के सारे काम काज वह परमेश्वर की सहायता से सबसे अच्छे तरीके से कर लेता था (दानिएल 6:3)। तब उनके साथी कर्मचारी दानिएल के विरुद्ध दोष ढूंढने लगे।

यहां पर एक और बात स्पष्ट करना उचित होगा कि राजा दारा को यह बात अच्छी लगी कि उसने अपने राज्य के ऊपर 120 ऐसे अधिपति ठहराए, जो पूरे राज्य पर अधिकार रखें या कहें कि अधिकारी नियुक्त कर दिया कि वे उस क्षेत्र का लेखा जोखा देखें और सटीक कार्य प्रणाली को क्रियान्वित करें। उन सारे अधिकारियों के ऊपर तीन ऐसे अध्यक्ष नियुक्त किये, जिनमें दानिएल एक था। जिससे लेखा जोखा सही से आता रहे और राज्य की कुछ हानि न हो सके, इसलिए यह फैसला लिया गया था।

दानिएल एक ईमानदार व्यक्ति था। हो सकता है कि यदि उनके साथी या अधिपतियों के द्वारा कुछ गलत हिसाब किताब किया जाता या कुछ भी गलत चीजें की जातीं, तो वह उन्हें होने नहीं देता होगा। शायद वे उस पुराने भ्रष्टाचारयुक्त कार्य प्रणाली को जो चली आ रही थी, उसे बदलना नहीं चाहते होंगे। दानिएल पूरी ईमानदारी के साथ सारे कार्यों को सही कार्य प्रणाली में करने और बदलाहट लाने के लिए कार्य कर रहा होगा।

जब ऐसा न हो सका, तो उसके साथ कार्य कर रहे अध्यक्ष और अधिपति उसके विरुद्ध दोष ढूंढने लग गए, परन्तु उन्होंने उसमें कुछ भी दोष नहीं पाया। इसलिए वे राजा दारा के पास गए और कोई दूसरा नया नियम बनवा लिया (दानिएल 6:7)। एक ऐसा षडयंत्र जिससे कि सामने वाला व्यक्ति पूरी तरह से खत्म हो जाये। उनका मकसद था, षडयंत्र रच कर किसी और ही बात के लिए किसी और ही तरीके से दानिएल को सजा दिलवाना।

सामान्यत:, यह बात आज के युग में भी देखी जाती है। जब लोग आपके विरुद्ध दोषारोपण करना चाहते हैं, तो वे अपने से बड़े अधिकारियों के पास जाते हैं और उस अधिकारी की तारीफ करते हुए कुछ दूसरी ही बात करके, जो सत्य है ही नहीं आपकी बुराई कर के चले आते हैं। जब वे बदनामी कर देते हैं, तब कहते हैं कि वह इंसान ऐसा आगे से न करें, इसलिए कुछ कदम उठाने चाहिए। यहां दानिएल के साथ ऐसी ही घटना घटित होती है। जब ये षड्यंत्र होती रहती हैं, तब इस बात का अहसास होता है कि आप सचमुच एक ऐसी परिस्थिति से गुजर रहे हैं, जिसमें आपके सामने भूखे सिंह घूम रहे हों, जो आपको आधा अधूरा नहीं, बल्कि पूरी तरह से खत्म करने की फिराक में हों।

अब सवाल उठता है कि ऐसी परिस्थितियों में हम क्या करें? जिसमें हमारे विरोधी बिलकुल सिंहों के समान अपने षडयंत्रों के साथ हमारे सामने खड़े हैं, तब हमें क्या करना चाहिए? क्या हमें भी अपने बचाव के लिए उनपर वार करना चाहिए? इसका सीधा

आत्मिक भोजन

20 जनवरी **मानवीय अन्तर्द्वन्द्व** **रोमियों 7:14-18**

किसी संत ने कहा है कि ''मानव हृदय युद्ध स्थल है जहां परमेश्वर और शैतान दोनों के मध्य संघर्ष होता है।'' मनुष्य शरीर, आत्मा और प्राण द्वारा निर्मित है। जिसमें शरीर और आत्मा के मध्य जोर अजमाईश होती रहती हैं। संत पौलुस कहता है कि वह शरीर एवं पाप के हाथों बिका हुआ है। वह अच्छे काम करना तो चाहता है लेकिन उससे वही होता है जो बुरा है। प्रिय मित्र, जीवन की इस जंग में फतह उसे ही मिलती है जो परमेश्वर की सामर्थ और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण है।

प्रार्थना – हे प्रभु, जीवन के इस संग्राम में जीत आपकी ताकत, शक्ति और आत्मा के द्वारा ही हमें मिले।

जवाब है, बिलकुल नहीं। यह बात हमें जान लेनी चाहिए कि परमेश्वर कहते हैं कि पलटा लेना मेरा काम है, तो हमें उन पर किसी भी तरीके का वार न करते हुए सिर्फ परमेश्वर को अवसर देना होगा यदि आप भी उन पर वार करेंगे, तो आपका ऐसा करना परमेश्वर को अवसर नहीं देना होगा, क्योंकि आपने ही उस अवसर को ले लिया है।

आज मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहूंगा कि आप ऐसी विपरीत परिस्थितियों से बिलकुल भी न घबरायें और न डरें, परमेश्वर आपके सिर के एक बाल को भी बांका नहीं होने देंगे। बाइबल स्पष्ट रूप से बताती है कि दानिएल ने ऐसी परिस्थिति में क्या किया (दानिएल 6:10)। दानिएल ने उन विरोधियों पर वार करने के बजाए परमेश्वर से प्रार्थना की है।

प्रियो, सम्भवत: हम ऐसी परिस्थितियों से गुजरे हों या फिर गुजर रहे हों, चाहे अपने कार्य क्षेत्र में या समाज में या पारिवारिक रिश्तेदारों में या कोई भी अन्य विषयों में, ऐसी परिस्थिति में हम बिलकुल भी घबराये नहीं और न डरें, बल्कि हमें सिर्फ परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए (भजन संहिता 120 और 121)। संकट के समय हमें सिर्फ परमेश्वर पिता को पुकारना चाहिए और उन्हें ही पलटा लेने का अवसर देना चाहिए।

यदि हम ऐसा करेंगे, तो इसका परिणाम हमारी भलाई के लिए होगा। परमेश्वर उन सब विरोधियों के मुंह बंद कर देंगे और उस परिस्थिति से हमें ऐसे निकाल ले आएंगे, जैसे मानो वे परेशानी एक ही झटके में समाप्त हो जायें या आये ही नहीं। यह अनुभव हमने अपने जीवनों में भी किया होगा, जो लोग इन परिस्थितियों से गुजरे हैं या गुजर रहे होंगे, वे ही इस बात को भली भांति समझ सकेंगे।

जब हम परमेश्वर पिता को हर बात में प्रथम स्थान और अवसर देंगे, तब वे हमें सिंहों की मांद और उन विपरीत परिस्थितियों से निकाल कर हमें ऊंचा करेंगे। जैसे कि हम दानिएल के जीवन में देखते हैं। सदा स्मरण रखें कि जिस परमेश्वर ने सृष्टि की रचना की (उत्पत्ति 1:1), वही परमेश्वर अब्राहम के साथ-साथ रहे (उत्पत्ति 17:1-3), वही परमेश्वर यूसुफ के संग रहे (उत्पत्ति 37), वही परमेश्वर मूसा और यहोशू के संग रहे (यहोशू 1:5), वही परमेश्वर आपके भी संग हैं (यशायाह 41:10), क्योंकि हमारा परमेश्वर कभी बदलता नहीं। इसलिए हमेशा साहस रखें और हर परिस्थिति में परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते हुए आगे बढ़ते जाएं। धन्यवाद! ❑

आशीष यूसुफ
राजनांदगांव, छ.ग.

शिशु गीत

नये कपड़ों में सजे धजे,
नये साल की खुशी में हंसते गाते।
टौमी ब्लैकी दुम हिलाते
देख रहे थे सबको चर्च जाते।

टौमी ने भी सोचा नये साल से,
बैरभाव भूल कर सबसे मिलके रहूंगा।
क्या मिलता है लड़ झगड़ के,
सब जानवरों से प्यार करूंगा।

तभी कहीं से एक बिल्ली आई,
म्याऊं म्याऊं जोर से चिल्लाई।
नये साल की अपनी सारी कसमें भूल
टौमी ने बिल्ली के पीछे दौड़ लगाई।

बच्चो क्या तुम सब भी,
नया साल मना रहो हो?
अच्छा आज्ञाकारी बच्चा बनने की,
कसमें खा रहे हो?

टौमी की तरह तुम भी न करना,
अपनी कसमों पर साल भर अटल रहना।
तभी प्रभु यीशु से तुम आशीष पाओगे,
और एक अच्छे बच्चे कहलाओगे।

रेव्ह. अरविन्द मित्रा
भिलाई, छत्तीसगढ़

आत्मिक भोजन

21 जनवरी **हमारे धर्म के काम** **उत्पत्ति 6:9**

वचन के अनुसार बुरे व्यक्ति को अपने बुरे कामों का अंजाम भुगतना पड़ता है। प्रिय मित्र, वचन के प्रकाश में हम इस बात को स्मरण रखें कि मनुष्य के भले काम उसके आंतरिक परिवर्तन के परिणाम हैं। हम यह जान लें कि परमेश्वर के सामने हम दिखावा ना करें। हम अपने धर्म के कामों को अपनी बुराई का ढाल ना बनाएं। हम परमेश्वर को धोखा नहीं दे सकते। प्रभु स्वयं ही कहते हैं कि यदि तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये धर्म के काम करोगे तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ प्रतिफल नहीं पाओगे।

प्रार्थना - हे प्रभु, मेरे धर्म के काम दिखावे के ना हो।

विशेष सूचना

22वीं लेखन कार्यशाला-2019

कार्यशाला का स्थान :- यीशु भवन, ओल्ड पुरुलिया रोड, मानगो, जमशेदपुर, झारखण्ड

गुड बुक्स एडुकेशनल ट्रस्ट इस बार लेखन कार्यशाला का आयोजन जमशेदपुर (झारखण्ड) में आयोजित करने जा रही है। ऐसे उम्मीदवार जो हिंदी मसीही साहित्य रचना में रुचि रखते हैं, वे इसमें सम्मिलित होने के लिए आवेदन भेज सकते हैं।

आवश्यक जानकारी निम्नलिखित है :-

उम्र	:	18 वर्ष से अधिक
शैक्षणिक योग्यता	:	10+2 या उससे अधिक
अतिरिक्त योग्यता	:	हिन्दी भाषा का ज्ञान एवं लेखन में रुचि।
सीट	:	40
पंजीकरण शुल्क	:	200/-
आगमन एवं रजिस्ट्रेशन	:	27.021.2019
प्रस्थान	:	02.03.2019 (दोपहर के भोजन के साथ)
यात्रा भत्ता	:	देय है।
अधिक जानकारी के लिए	:	0651-2331394, 09006730659 पर संपर्क करें।
आवेदन ईमेल द्वारा भेज सकते हैं	:	**E-mail : masihiahwan@gmail.com**

आवेदन प्राप्त करने की अंतिम **तिथि 31 जनवरी 2019**

आवेदन-पत्र इस प्रारूप के आधार पर भेजें :-

1. आवेदक का नाम :.....
2. उम्र :..... 3. लिंग : .....
4. शैक्षणिक योग्यता :.....
5. व्यवसाय (कृपया चिह्नित करें) :.....
   विद्यार्थी/शिक्षक/पासबान/सेवक/सामान्य जन
6. पत्राचार का पता :.....
7. फोन/मोबाइल :.....
8. चर्च/संस्था :.....
9. कार्यशाला में पूर्व उपस्थिति : हां/नहीं
10. लेखन में रुचि : लेख/कहानी/कविता
11. हस्ताक्षर :.....

    तिथि :.....

आवेदन-पत्र भेजने का पता :

Good Books Educational Trust
Good Books Building
2nd Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001

आत्मिक भोजन

22 जनवरी **प्रभु का नाम** **मत्ती 18:18-20**

प्रार्थना मसीही जीवन की आधार शिला है। यह परमेश्वर के साथ सम्पर्क में रहने का एक सशक्त माध्यम है। साथ ही हमारे और प्रभु के बीच मधुर बातचीत है। इसलिये जब हम प्रभु के नाम से प्रार्थना करते या उसके नाम से एकत्र होते हैं तो वहां उसकी उपस्थिति होती है। प्रिय मित्र, हमारी प्रार्थना सुनी जाये, इसके लिये यह आवश्यक है कि हम एक मन से प्रभु से मांगें, प्रार्थना करें। तो हमारी यह प्रार्थना सुन ली जायेगी। अत: आज सवाल उठता है कि हम कितनी बार एक मन से प्रभु के पास आते हैं?

प्रार्थना - हे प्रभु, हम एकत्र होकर आपके नाम से प्रार्थना करना सीखें।

उगने वाले बीज का दृष्टान्त

'परमेश्वर के राज्य' की व्याख्या करने के लिए कई उदाहरणों का प्रयोग किया जो लोगों के दैनिक जीवन से सम्बन्धित थे।

आइए उनमें से हम-''रात में उगने वाले बीज'' के दृष्टान को देखें। जो इस प्रकार है: उसने कहा, ''परमेश्वर का राज्य ऐसा है जैसे कोई मनुष्य भूमि पर बीज डाले, और रात को सो जाए और दिन को जाग जाए और वह बीज अंकुरित होकर बढ़े-वह व्यक्ति स्वयं नहीं जानता कि यह कैसे होता है। भूमि अपने आप फसल उपजाती है, पहिले अंकुर, तब बालें और तब बालों में तैयार दाने'' (मरकुस 4:26-28)। अब आइए हम देखें कि इस दृष्टान्त का क्या अर्थ है। लेकिन पहले यह देखें कि प्रभु यीशु ने जिन वस्तुओं को इसमें प्रतीक के रूप में प्रयोग किया वे क्या हैं!

सबसे पहले, बीज परमेश्वर का वचन है। बीज बोने वाला परमेश्वर का सेवक। जो परमेश्वर के वचन का प्रचार इस संसार रूपी खेत में करता है-अर्थात् बीज बोता है।

फिर क्या होता है ? दृष्टान्त में बताया गया है कि बीज बोने वाला बीज बोकर रात में सो जाता है फिर जब वह जागता है तो देखता है कि वह बीज अंकुरित हो गया है। वह स्वयं यह नहीं जानता कि यह कैसे होता है।

अब जरा इसके बढ़ने की प्रक्रिया पर गौर करें। आपने अवश्य किसी बीज को देखा होगा? अच्छा चने के बीज को ही लें। वह कैसा दिखाई पड़ता है? जी हां, वह सूखा हुआ बीज मृत दिखाई पड़ता है। मगर क्या आप जानते हैं उसके अन्दर भी जीवन है। वह चने का बीज जीवित है। इसे जांचने के लिए आप कुछ चने के बीज लीजिए। उन्हें आप पानी में भींगों कर नम स्थान पर रख दीजिए। दो दिनों के बाद आप देखेंगे कि चने के उन बीजों में अंकुर निकल आएं हैं। यदि उन्हें आप किसी गमले में या जमीन के नीचे मिट्टी में दबा दें तो कुछ दिनों बाद वह बढ़ कर पौधा बन जाएगा। क्या आप जानते हैं ऐसा कैसे होता है? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उस बीज में जीवन है और वह पानी और मिट्टी मिलने के कारण बढ़ता है। उसी प्रकार परमेश्वर का वचन भी बीज है जो उसके सेवकों अर्थात् प्रचारकों के द्वारा संसार में बोया जाता है। भूमि मनुष्य का हृदय है। जब कोई व्यक्ति परमेश्वर के वचन को सुनता है या पढ़ता है तो वह बीज अर्थात् वह वचन उसके अन्दर विश्वास उत्पन्न करता है। उसके जीवन को बदल देता है। परन्तु आप गौर कीजिए बोने वाला सिर्फ बीज होता है-पर वह बीज कैसे अंकुरित होता है, कैसे बढ़ कर पौधा बनता है और फल देता है? वह नहीं जानता।

आइए, मैं इसके बारे में आपको बताता हूं कि यह कैसे बढ़ता है? उस बीज को परमेश्वर बढ़ाता है। जी हां, परमेश्वर। बीज बोने वाला उनको नहीं बढ़ा सकता लेकिन परमेश्वर बढ़ाता है। हम नहीं जानते कि परमेश्वर ऐसा कैसे करते हैं। वही बीजों को अंकुरित करता उन्हें बढ़ाता और उनसे कई गुणा उपज देता है। यह अद्‌भुत बात नहीं कि परमेश्वर अपनी सामर्थ से बीज अर्थात् परमेश्वर के वचन को जिसमें जीवन है, सामर्थ है बढ़ाता है। मेरे कहने का अभिप्राय है कि बीज में भी सामर्थ है। अद्‌भुत सामर्थ जीवन को परिवर्तित करने की सामर्थ। भूमि में भी सामर्थ है। महान सामर्थ। हम इसे समझ नहीं सकते। हमें सिर्फ इतना करना है कि हम बीज बोएं। लोगों को वचन सुनाएं, हम उनको परमेश्वर के प्रेम के बारे में बताएं उन्हें प्रभु यीशु की क्रूस मृत्यु की गवाही दें। फिर देखिए। परमेश्वर कैसे उन बीजों को बढ़ाएगा और अपने राज्य को बढ़ाएगा।

बात यहीं पर समाप्त नहीं होती है। दृष्टान्त में बताया गया है कि बीज बोने वाले ने दिन में बीज बोया फिर रात में सो गया। जब वह सुबह उठा तो देखा कि वे बीज अंकुरित हो गए हैं। प्रभु यीशु के ऐसा कहने का मतलब यह है कि बीज से अंकुर निकलने, उनसे पौधा बनने की प्रक्रिया या कहें - विकास की प्रक्रिया रात में होती है। पौधे रात में ही बढ़ते हैं।

यदि हम प्रभु यीशु की सांकेतिक भाषा को देखें तो हमें समझ में आएगा कि इसका क्या अर्थ है। सबसे पहले यह देखें कि रात क्या है? जी हां, रात, हमारे जीवनों में आने वाले कठिन समय को दर्शाती है। निराशा, हानि, दुख, बीमारी तथा अन्य परिस्थिति हमारे जीवन में हमारे विश्वास की परख के लिए आते हैं, ताकि हम सम्पूर्ण रीति से परमेश्वर पर भरोसा रखें, उससे प्रार्थना द्वारा जुड़े रहे, उसकी निकटता, उसकी उपस्थिति में रहें।

आत्मिक भोजन

23 जनवरी **समाधि लेख** **उत्पत्ति 6:9-12**

जल प्रलय से पूर्व तक संसार की बिगड़ी दशा के विषय में परमेश्वर का वचन स्पष्ट बतलाता है; सारी पृथ्वी पर लोगों ने अपना चाल-चलन बिगाड़ लिया था। पृथ्वी पर बुराई इतनी बढ़ चुकी थी कि परमेश्वर स्वयं ही पछताया। लिखा है कि वह मन में अति खेदित हुआ (उत्पत्ति 6:6)। अत: उसने जल प्रलय भेजकर लोगों को दण्डित किया। केवल नूह और उसका परिवार इस दण्ड के भागीदार नहीं हुए। क्या यह हम सबों के लिये चितावनी की बात नहीं है? हम इस बात की चिंता करें कि मृत्यु उपरान्त हमारी समाधि पर क्या लिखा जायेगा ''मूर्ख'' या ''बुद्धिमान''!

प्रार्थना - हे प्रभु, आपको और आपके वचन को कभी ठट्ठों में न उड़ाऊं।

उसके वचन पर मनन करें। जो हमारे हृदय रूपी भूमि में बोया गया है।

इस तरह हमारी आत्मिक उन्नति होती है। हम बढ़ते हैं और दूसरों को गवाही देते हैं। इस प्रकार परमेश्वर के राज्य में लोग आते हैं और परमेश्वर का राज्य फैलता है।

हमारे जीवन में हमेशा एक सी स्थिति बनी नहीं रहती। कभी हमारे जीवन में सुख का समय आता है तो कभी दु:ख का। कभी हंसने का समय आता है तो कभी रोने का। ठीक उसी प्रकार जैसे दिन के बाद रात आती है और रात के बाद दिन होता है। ये हमारे जीवन के अंग हैं। उदाहरण के लिए : वर्षा हमारे जीवन और स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। ताकि बारिश के पानी से खेत सींचे जाएं और अच्छी फसल हो। परन्तु हम नहीं चाहते कि हमेशा बारिश होती रहे। अब इस बात पर भी गौर कीजिए कि बहुत कम बारिश या बारिश का नहीं होना भी ठीक नहीं हे। यदि बारिश नहीं होगी तो फसल नहीं होगी। नदियों, तालाबों और कुंओं में पानी नहीं होगा और आकाल की स्थिति हो सकती है। दोनों ही सूरत में हमें हानि है। ज्यादा बारिश बाढ़ को उत्पन्न कर सकती है। और बारिश का न होना सूखे को। उसी प्रकार हमें हमेशा दिन नहीं चाहिए। दिन के बाद रात का आना जरूरी है। यह बात परमेश्वर बहुत अच्छी तरह जानता है। इसलिए तो उसने दिन और रात को बनाया। ताकि हम दिन में काम करें और रात में सोएं, आराम करें और अपनी दिन भर की थकान दूर करके फिर से नए दिन में प्रवेश करें और उत्साह के साथ काम करें।

उसी प्रकार परमेश्वर हमारे जीवन में दुख, तकलीफ, परेशानियों को आने देता है कि हमारा विकास हो सके। हम अपने विश्वास और भरोसे को परमेश्वर पर और अधिक ला सकें। समर्पित जीवन जी सकें ताकि वह हमें बढ़ाए जिस प्रकार वह बीज को रात के समय बढ़ाता है।

भजनकार राजा दाऊद कहता है : ''चाहे मैं मृत्यु के घोर अन्धकार की तराई में होकर चलूं, फिर भी हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है (भजन संहिता 23:4)। दाऊद कहता है वह खतरों और मुसीबतों से नहीं डरता क्योंकि उसे विश्वास है कि उस समय भी परमेश्वर उसके साथ है। प्रिय मित्र, मृत्यु के घोर अन्धकार की तराई, क्या है। जी हां, हमारा कठिन समय, हमारी परीक्षा का समय। जिसमें हमारे विश्वास की परख होती है। यह समय परमेश्वर के बड़े-बड़े विश्वासियों के जीवन में आया। यह हमारे जीवन में आता है और आएगा। परन्तु इस परिस्थिति में हमें डरने या घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि हमारा परमेश्वर हमारे साथ है। वह हमें कभी नहीं छोड़ेगा। बल्कि वह हमें उस परिस्थिति का सामना करने की सामर्थ देगा और उस विनाश के गर्त में से दुख की तराई में से बाहर भी निकालेगा। क्योंकि वह हमें कभी भी ऐसी परीक्षा में पड़ने नहीं देगा जो हमारे सहने से बाहर हो।

आइए अब हम फिर से अपने मुख्य विषय में आएं। उस दृष्टांत में प्रभु यीशु ने बताया कि बीज रात में अंकुरित हुए-यह कैसे हुआ बीज बोने वाला भी नहीं जानता सिर्फ परमेश्वर जानता है। यह परमेश्वर का आश्चर्य कर्म है। परमेश्वर को वचन रूपी बीज के बोए जाने पर पूरी तरह निश्चय रहता है कि उसमें अंकुर जरूर निकलेगा, वह बढ़ कर पौधा बनेगा और उसमें से अच्छी फसल होगी। और यह फसल है परमेश्वर के विश्वासी लोग जो आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना स्तुति करते हैं-उसकी सेवा करते हैं।

प्रिय मित्र, आज भी परमेश्वर के सेवक उसके राज्य का सुसमाचार इस संसार में बो रहे हैं। आज जब आप इस संदेश को पढ़ रहे हैं इसके द्वारा भी परमेश्वर के राज्य का बीज बोया जा रहा है। बड़े ध्यान से सुनें। जी हां, परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में बोये जाने दें ताकि वह आपके जीवन में कार्य करें। आपको नया जीवन दे। आपको एक नया व्यक्ति बनाए। उसके पवित्र आत्मा के द्वारा परमेवश्र का वचन सींचा जाता है, वह बढ़ता है। आपके अन्दर विश्वास उत्पन्न करता है। यदि आप प्रतिदिन परमेश्वर का वचन बाइबल पढ़ेंगे। उससे प्रार्थना करेंगे। उसकी आराधना स्तुति करेंगे। वह आपके अन्दर बोए गए बीज को बढ़ाएगा और आपको फलवन्त बनाएगा। आपका जीवन परमेश्वर के आनन्द से, शान्ति से और प्रभु से भर जाएगा।

इसके लिए आपको सिर्फ यही करना होगा कि आप परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में अपनाएं। उसे अपने हृदय में जड़ पकड़ने दें। क्योंकि उसमें जीवन है-अनन्त जीवन। परमेश्वर आपको आशीष दें। ❑

विद्युत सौरभ मिंज
जी.बी.ई.टी., रांची, झारखंड

आत्मिक भोजन

24 जनवरी **परमेश्वर की शान्ति** **यशायाह 65:13**

आज हम जिस संसार में जीवन व्यतीत कर रहे हैं वहां शान्ति की कितनी जरूरत है यह किसी से छिपा नहीं है। प्राकृतिक आपदायें, लड़ाई-झगड़े, युद्ध, फसाद, बीमारी यही तस्वीर है। हम टूटे हुए संसार में रहते हैं जहां परिवार और समाज टूटे पड़े हैं। वचन के प्रकाश में जिस परमेश्वर ने अपनी शांति इस्राएल को दी, वही प्रभु हमें अपनी शान्ति देंगे। उसने स्वयं ही कहा ''मैं तुम्हें अपनी शान्ति देता हूं ऐसी नहीं जैसी संसार तुम्हें देता है।''

प्रार्थना - हे परम प्रधान प्रभु, आपकी दी हुई शान्ति से हमें सुकून मिलता है।

सेहत

• छोटी सी इलायची के अनेक सेहत और सौंदर्य फायदे - भारतीय पकवानों में डलने वाला एक महत्वपूर्ण मसाला है इलायची। अगर अभी तक आपको लगता था कि इलायची खाने में इस्तेमाल करने से केवल खाने की महक और स्वाद ही बढ़ता है, तो आप गलत सोच रहे हैं। इलायची का इस्तेमाल आपके भोजन का स्वाद बढ़ाने के साथ ही आपकी सेहत और सुंदरता को भी बढ़ा सकता है। आइए जानते हैं कि कैसे- 1. यदि आपको कील-मुंहासे की समस्या रहती है तो आप नियमित रात में सोने से पहले गर्म पानी के साथ एक इलायची का सेवन करें। इससे आपकी त्वचा संबंधी समस्या दूर होगी। 2. यदि आपको पेट से संबंधित समस्या है, आपका पेट ठीक नहीं रहता या आपके बाल बहुत ज्यादा झड़ते हैं तो इन सभी समस्याओं से बचने के लिए आप इलायची का सेवन करें। इसके लिए आप सुबह खाली पेट 1 इलायची गुनगुने पानी के साथ खाएं। 3. दिनभर की बहुत ज्यादा थकान के बाद भी अगर आपको नींद आने में परेशानी होती है तो इसका उपाय भी इलायची है। नींद आने की समस्या से निजात पाने के लिए आप रोजाना रात को सोने से पहले इलायची को गर्म पानी के साथ खाएं। ऐसा करने से नींद भी आएगी और खर्राटे भी नहीं आएंगे।

• कैल्शियम की कमी दूर करना है तो इन 7 सस्ते और सरल उपायों को अपनाएं - हममें से कई लोगों की कैल्शियम की कमी की वजह से हड्डियां कमजोर हो जाती हैं। आइए जानें 7 बहुत ही सरल और सस्ते उपाय जो दूर करेंगे कैल्शियम की कमी। मात्र 2 रुपए से लेकर 10 रुपए तक में संभव है कैल्शियम की कमी का इलाज। यह इलाज विशेष रूप से उनके लिए हैं जो दूध या दूध से बने पदार्थ नहीं लेते हैं।

1. पानी में अदरक डाल कर उबालें। इस पानी में शहद और हल्का नींबू निचोड़ें। सुबह 20 दिन तक पिएं। कैल्शियम की आपूर्ति होगी। 2. प्रति दिन 2 चम्मच तिल का सेवन करें। आप इसे लड्डू या चिक्की के रूप में भी ले सकते हैं। 3. एक चम्मच जीरे को रात भर पानी में भिंगो दें। सुबह इसका सेवन करें। 15 दिन में लाभ दिखेगा। 4. 1 अंजीर व दो बादाम रात में गलाएं और सुबह इसका सेवन करें। शर्तिया फायदा होगा। 5. रागी का हफ्ते में एक बार किसी ना किसी रूप में सेवन करें। दलिया, हलवा या खीर बनाकर ले सकते हैं। किसी भी प्रकार से रागी कैल्शियम का विश्वसनीय स्रोत है। 6. नींबू पानी दिन भर में एक बार अवश्य लें। 7. अंकुरित अनाज में कैल्शियम प्रचुर मात्रा में होता है। अगर आप अंकुरित आहार नहीं ले सकते हैं तो हफ्ते में एक बार सोयाबीन ले सकते हैं।

• ट्रैफिक के कारण महिलाओं में स्तन कैंसर का खतरा - सड़कों के पास काम करने वाली महिलाओं में स्तन कैंसर का खतरा अधिक होता है। एक रिसर्च में यह बात सामने आई है। शोधकर्ताओं ने इस बात से सचेत किया है कि ट्रैफिक के कारण होने वाले वायु-प्रदूषण से महिलाओं को स्तन कैंसर का खतरा पैदा हो सकता है। स्कॉटलैंड के स्टर्लिंग विश्विद्यालय के रिसर्चर्स की टीम ने कैंसर की मरीज एक महिला की स्टडी की। इस स्टडी से पता चला कि ट्रैफिक से दूषित हवा स्तन कैंसर का कारण बन सकती है। यह महिला उत्तरी अमेरिका में एक व्यस्त व्यावसायिक सीमा पारगमन पर बतौर सीमा गार्ड के रूप में काम करती थीं। वह 20 साल तक वहां सीमा गार्ड रहीं। इसी दौरान वह स्तन कैंसर से ग्रस्त हुई थीं। यह महिला उन पांच अन्य सीमा गार्डों में एक हैं, जिनहें 30 महीने के भीतर स्तन कैंसर हुआ। ये महिलाएं पारगमन के पास काम करती थीं। इसके अलावा इस तरह के सात अन्य मामले दर्ज किए गए। माइकल गिल्बर्टसन के मुताबिक, निष्कर्षों में स्तन कैंसर और स्तन कैंसरकारी तत्व वाले ट्रैफिक संबंधी वायु प्रदूषण के अत्यधिक संपर्क में आने के बीच एक अनौपचारिक संबंध दर्शाया गया है। रात के समय काम करने और कैंसर के बीच एक संबंध की भी पहचान की गई है। गिल्बर्टसन ने कहा, 'यह नया शोध आम आबादी में स्तन कैंसर के बढ़ते मामलों में यातायात संबंधी वायु प्रदूषण के योगदान की भूमिका के बारे में संकेत देता है। न्यू सॉलूशन पत्रिका में प्रकाशित स्टडी में कहा गया है कि 10 हजार मौकों में से एक मामले में यह एक संयोग था क्योंकि यह सभी बहुत हद तक एक जैसे थे और आपस में एक दूसरे के करीब थे।

आत्मिक भोजन

25 जनवरी **हर्ष से देना** **2 कुरिन्थियों 9:6-8**

एक सुन्दर मसीही गीत के बोल हैं ''दिया प्रभु ने देना सिखाया लेने देने का आधार है।'' आज यदि हम प्रभु को एवं उनकी कलीसिया या किसी भी जरूरतमंद के लिये अपनी मुट्ठी खोलते हैं तो हम आशीषों के भागीदार बनते हैं। प्रिय मित्र, जहां तक देने का सवाल है तो फिर यदि हम देते हैं तो हम हर्ष से दें क्योंकि हर्ष से देनेवाला परमेश्वर के प्रेम का पात्र बनता है।

प्रार्थना - हे प्रभु, कलीसिया या किसी जरूतमंद को उदारता से ही देना सीखूं।

विज्ञान जगत

• सूरज की किरणों से बचाएगी घड़ी - सूरज की परबैंगनी किरणों के बीच लगातार रहने पर त्वचा कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी हो सकती है। एप्पल एक नई घड़ी लाया है, जो पराबैंगनी किरणों के नुकसान से बचाएगा। इस नई घड़ी का पेटेंट अमेरिका में हो चुका है। एप्पल इनसाइडर के मुताबिक, एप्पल वॉच सीरीज 4 सूरज की पराबैंगनी किरणों की निगरानी करेगी।

• ये 'राधा' पूरे भारत ही नहीं विश्व के लिए है खास - 17 महीने से पुणे के गैलेक्सी अस्पताल में इलाज करा रही मीनाक्षी वलाण्ड को 18 अक्टूबर को सीजेरियन सेक्शन से बिटिया पैदा हुई। लेकिन एक ही दिन में उनकी बिटिया देश भर में सेलिब्रिटी हो गई है। वजह है वह भारत ही नहीं पूरे एशिया-प्रशांत में पहली बच्ची है जो गर्भाशय ट्रांसप्लांट से पैदा हुई है। गुजरात के भरूच की रहने वाली मीनाक्षी वलाण्ड देश की पहली महिला है जो गर्भाशय ट्रांसप्लांट से मां बनी है। 17 महीने पहले जब मीनाक्षी पुणे के गैलेक्सी अस्पताल में डॉ. शैलेश पुटंबेकर से मिली तो वह बेहद निराश थी। डॉ. शैलेश पुटंबेकर देश भर में यूटरेस (गर्भाशय) ट्रांसप्लांट के लिए जाने जाते हैं और पुणे के गैलेक्सी अस्पताल में कार्यरत हैं।

राधा 32 हफ्ते ही मां के गर्भ में रही। जन्म के समय उसका वजन 1 किलो 450 ग्राम था। फिलहाल मां और बेटी दोनों स्वस्थ हैं और मां बच्चे को अपना दूध भी पिला पा रही है। राधा तब तक अस्पताल में ही रहेगी जब तक उसका वजन 2 किलोग्राम नहीं हो जाता। मीनाक्षी को भी कोई दिक्कत नहीं है, उन्होंने खाना-पीना भी शुरू कर दिया है। मीनाक्षी को जो गर्भाशय ट्रांस्प्लांट कराया गया था, वह उनकी मां का था। मीनाक्षी की मां की उम्र 48 साल है। उस लिहाज से गर्भाशय की भी उम्र 48 साल ही हुई। इतने साल पुराने गर्भाशय को बच्चा रखने की आदत नहीं होती। मीनाक्षी की मां 20 साल पहले प्रेग्नेंट हुई थी। इसलिए सीजेरियन के अलावा कोई और तरीका नहीं था। डॉ. शैलेश विस्तार से इस पूरी प्रक्रिया को समझाते हैं। यूटरस ट्रांसप्लांट के समय केवल यूटरेस ट्रांसप्लांट होता है, साथ के नसों को ट्रांसप्लांट नहीं किया जा सकता। इसलिए इस तरह की प्रेग्नेंसी मे 'लेबर पेन' नहीं होता। आमतौर पर इस तरह के ट्रांसप्लांट में डोनर की उम्र 40 से 60 साल के बीच की होनी चाहिए।

दुनिया में यूटरस ट्रांसप्लांट न के बराबर होते हें। डॉ. शैलेश के मुताबिक पूरी दुनिया में अब तक केवल 26 महिलाओं का ही यूटरस ट्रांसप्लांट किया गया है, जिनमें से केवल 14 ही सफल हुए हैं। जबकि कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक पूरी दुनिया में 42 यूटरस ट्रांसप्लांट के मामले सामने आए हैं। हालांकि केवल 8 मामलों में महिला ने ट्रांसप्लांट के बाद गर्भ धारण किया है। आठ मामलों में सात स्वीडन के हैं और एक अमरीका का है। मीनाक्षी का मामला एशिया प्रशांत का पहला है जहां यूटरेस ट्रांसप्लांट के बाद बच्चा पैदा हुआ है। डॉ. शैलेश के मुताबिक यूटरस ट्रांसप्लांट की पहली शर्त ही होती है कि डोनर महिला मां, बहन या मौसी हो। देश में इस पर फिलहाल कोई कानून नहीं बना है क्योंकि साइंस की इस विधा में अभी ज्यादा सफलता नहीं मिली है।

डॉ. शैलेश के मुताबिक एक बार डोनर मिल जाए तो, फिर लैप्रस्कोपी से यूटरस निकाला जाता है। यूटरस ट्रांसप्लांट का मामला लिविंग ट्रांसप्लांट का मामला होता है। इसमें जिंदा महिला ही के यूटरस को लिया जा सकता है। पूरी प्रक्रिया में दस से बारह घंटे का वक्त लगता है। दूसरे ऑर्गन डोनेशन की तरह किसी महिला के मरने के बाद यूटरेस डोनेट नहीं किया जा सकता

हाई रिस्क प्रेग्नेंसी - एक बार यूटेरस ट्रांसप्लांट हो जाए तो तकरीबन एक साल बाद ही महिला का गर्भ बच्चा रखने के लिए तैयार हो पाता है, लेकिन वो भी सामान्य प्रक्रिया से नहीं। डॉक्टरों के मुताबिक, यूटरस ट्रांसप्लांट के बाद अकसर 'रिजेक्शन' का खतरा रहता है। यानी ज्यादातर मामलों में शरीर बाहर के ऑर्गन को स्वीकार नहीं करता। इसलिए एक साल तक मॉनिटर करने की जरूरत पड़ती है। यूटरस ट्रांसप्लांट के बाद अगर महिला को बच्चा चाहिए तो एम्ब्रायो योनी भ्रूण को लैब में बनाया जाता है और फिर महिला के बच्चेदानी में स्थापित किया जाता है। भ्रूण बनाने के लिए मां के अंडाणु और पिता के शुक्राणु का इस्तेमाल किया जाता है। मीनाक्षी के मामले में भी ऐसा ही किया गया। 2018 अप्रैल के पहले सप्ताह में लैब में तैयार किए गए भ्रूण को डॉ. शैलेश और उनकी टीम ने उनकी बच्चेदानी में स्थापित किया।

इस तरह के हाई रिस्क प्रेग्नेंसी की जटिलता के बारे में चर्चा करते हुए डॉ. शैलेश कहते हैं, ''मीनाक्षी कई तरह की इम्यून-सप्रेसेंट दवाइयों पर है। ऐसे में प्रेग्नेंसी के दौरान डायबिटीज का खतरा बढ़ जाता है। उसे मैनेज करना जरूरी होता है। साथ ही ब्लड प्रेशर भी ज्यादा बढ़ने-घटने की गुंजाइश होती है। इसलिए पेशेंट को निगरानी में रखना जरूरी होता है।

आत्मिक भोजन

26 जनवरी **प्रार्थना और निवेदन** **1 तीमुथियुस 2:1,2**

सन् 1952 को देश में भारतीय संविधान लागू किया गया। राष्ट्र ने जीवन और स्वतंत्रता के लिये आंखें खोल ली थी। हम गुलामी से 15 अगस्त 1947 को आजाद हो गये थे। प्रिय मित्र, देश एवं इसके कर्णधारों के लिये आज विशेष प्रार्थना निवेदन प्रभु के सामने रखें जायें ताकि वे इस देश को नई दिशा दे सकें। आज संकल्प लेने का दिन है और हम यह संकल्प लें कि हम सभी मिलकर देश को प्रगति, भाईचारे, प्रेम और मेल-मिलाप के पथ पर ले चलेंगे। वचन में लिखा है धन्य है वह राष्ट्र जिसका प्रभु ही परमेश्वर है।

प्रार्थना - हे प्रभु, इस गणतंत्र दिवस पर मेरे राष्ट्र एवं इसके कर्णधारों पर आपकी आशीष और दया बनी रहे।

चर्चा परिचर्चा

• पाकिस्तान में ईशनिंदा के कारण फांसी की सजा पाई ईसाई महिला को मिली बड़ी राहत : पाकिस्तान के उच्चतम न्यायालय ने अपने ऐतिहासिक फैसले में 31 अक्टूबर को ईशनिंदा की दोषी एक ईसाई महिला की फांसी की सजा को पलट दिया। अपने पड़ोसियों के साथ विवाद के दौरान इस्लाम का अपमान करने के आरोप में 2010 में आसिया बीबी को दोषी करार दिया गया था। उन्होंने हमेशा खुद को बेकसूर बताया हालांकि बीते आठ वर्ष में उन्होंने अपना अधिकतम समय एकांत कारावास में बिताया। पाकिस्तान के मुख्य न्यायाधीश साकिब निसार की अगुवाई वाली शीर्ष अदालत की तीन सदस्यीय पीठ ने अपना फैसला सुनाया। पीठ ने इस नतीजे पर पहुंचने के करीब तीन सप्ताह बाद इस संबंध में फैसला सुनाया। फैसला आने में हो रही देरी को देखते हुए ईशनिंदा विरोधी प्रचारकों ने प्रदर्शन की धमकी दी थी। निसार ने फैसले में कहा कि उनकी दोषसिद्धि को निरस्त किया जाता है और अगर अन्य आरोपों के तहत जरूरी नहीं हो, तो उन्हें फैारन रिहा किया जाए। हिंसा की आशंका को देखते हुए इस्लामाबाद में सुनवाई के दौरान कड़े सुरक्षा इंतजाम किये गये थे। फैसले के बाद पाकिस्तान के विभिन्न शहरों में प्रदर्शन हुए। पूर्व सैन्य तानाशाह जियाउल हक ने 1980 के दशक में ईशनिंदा कानून लागू किया था। इस कानून के तहत दोषी व्यक्ति को मृत्युदंड की सजा का प्रावधान है। 1991 के बाद से ईसाई समुदाय के कई लोग इस कानून के तहत दोषी ठहराए गए हैं। जबकि पाकिस्तान की जनसंख्या में ईसाई समुदाय सिर्फ 1.6 फीसदी है। साल 1990 के बाद से अब तक लगभग 65 लोगों को ईशनिंदा के मामले में जान से मारा जा चुका है। चरमपंथियों के प्रदर्शन के बावजूद सोशल मीडिया पर इस फैसले को खूब सराहा जा रहा है। बीबी के वकील सैफुल मुलुक ने मीडिया को बताया कि यह उनके जीवन का सबसे खुशनुमा दिन है।

• आर्च बिशप फेलिक्स टोप्पो ने ग्रहण किया 'स्कंधपट' :- संत पिता फ्रांसिस (पोप) द्वारा भेजे गये स्कंधपट (पल्लीयुम) को कैथोलिक रांची आर्च डायसिस के आर्च बिशप फेलिक्स टोप्पो को प्रदान किया गया। विशेष धार्मिक प्रतीक चिह्न स्कंधपट को लेकर पोप के प्रतिनिधि वेटिकन के राजदूत आर्च बिशप ज्याम्बत्तिसता दिक्वात्रों ने प्रदान किया। इस अवसर पर 27 नवंबर को डॉ कामिल बुल्के पथ पर स्थित संत मरिया महागिरजाघर में विशेष धार्मिक अनुष्ठान हुआ। प्रतीक चिह्न धारण करने के बाद आर्च बिशप फेलिक्स टोप्पो ने कलीसिया के प्रति जिम्मेवारी और संत पिता के प्रति आभार व्यक्त करते हुए विशेष पत्र को स्मरण किया। इसके बाद उक्त पत्र व शपथ पत्र में आर्च बिशप फेलिक्स और राजदूत दिक्वात्रों ने हस्ताक्षर कर स्कंधपट धारण करने की औपचारिक धार्मिक विधि पूर्ण की। स्कंधपट धारण करने के बाद मिस्सा अनुष्ठान की विधि पूर्ण की गई। इसका संचालन आर्च बिशप फेलिक्स ने की उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि स्कंधपट प्रदान करने और ग्रहण करने का धार्मिक अनुष्ठान का प्रतीक है, जिसका तात्पर्य यह है कि स्कंधपट प्राप्त करने वाले महाधर्माध्यक्ष का प्रेरित संत सिमोन पैत्रुस के उत्तराधिकारी के साथ एक विशिष्ट सहभागिता है। यह सहभागिता धर्मशिक्षा, अनुशासन और प्रेरितिक कार्य में एकता का प्रतीक है। साथ ही यह ख्रीस्त और आत्माओं के प्रति महत्तर प्रेम का सूचक है। उन्होंने कहा स्कंधपट एक धर्माध्यक्ष को प्रभु यीशु के वचनों की याद दिलाता है। हमारा प्रभु यीशु भला चरवाहा है और वे अपनी भेड़ों के लिए अपने प्राण न्योछावर कर देते हैं। प्रभु से हम पुरोहितों सहित कलीसिया के लोगों को सीख लेने की भी जरूरत है।

आर्च बिशप फेलिक्स टोप्पो

आर्च बिशप ने बताया कि पल्लीशुम या स्कंधपट जो मेरे कंधे पर डाला गया है, यह बेदाग-दोषरहित मेमने के शुद्ध ऊन से बुना हुआ है। रोम के धर्माध्यक्षगण चौथी शताब्दी से ही इसे पहनते थे। स्कंधपट उनके लिए ख्रीस्त के जुए का या ख्रीस्त की बंहगी का प्रतीक था। इसका बाकी हिस्सा सफेद ऊन का बना होता है। इसमें उन दो

आत्मिक भोजन

27 जनवरी **भलाई करें** **नीतिवचन 3:27**

18वीं सदी के महान धर्म प्रचारक जौन वेस्ली ने कहा था ''जितना भला तुम कर सकते हो करो जहां भी कर सकते हो करो जैसे भी कर सकते हो करो।'' हमारी रचना भी वो विधाता ने इसलिये की है कि हम भलाई का काम अपनी शक्ति, अपने ज्ञान, बुद्धि और धन से करें। धर्म के काम और भलाई के काम ईश्वरीय दृष्टि में अनमोल हैं।

प्रार्थना - हे प्रभु, दूसरों का बुरा नहीं पर भला ही करने में जीवन व्यतीत हो जाये।

चर्चा परिचर्चा

भेड़ों का थोड़ा ऊन मिला हुआ होता है, जिन्हें प्रति वर्ष रोम स्थित लातेरन महागिरजाघर की मुख्य वेदी पर समारोही पवित्र मिस्सा के दौरान आशीष देकर संत पापा को लगान स्वरूप भेंट किया जाता है। स्कंधपट में काले धागे के छह छोटे-छोटे क्रूस उकेरे हुए होते हैं। इनमें छाती, पीछे और बाई बांह के भागों में रत्न जड़ित सोने की एक-एक सूई डालने की व्यवस्था होती है।

• **प्रार्थना सहभागिता सभा** :- कोई भी व्यक्ति बिना विश्वास के परमेश्वर की खोज नहीं कर सकता और कोई भी व्यक्ति बिना परमेश्वर का वचन सुने विश्वास नहीं कर सकता। इस तथ्य की पुष्टि बाइबल रोमियों 10:17 में करती है: ''अत: विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन के द्वारा होता है।'' इन वचनों को देखने से हमें स्पष्ट होता है कि बिना परमेश्वर का वचन सुने और विश्वास का वचन सुने और विश्वास किए कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के पास नहीं आ सकता। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए गुड बुक्स एजुकेशनल ट्रस्ट वर्षों से मीडिया के प्रयोग द्वारा परेश्वर के वचन का प्रचार कर रही है। इसके द्वारा असंख्य लोग परमेश्वर का वचन सुन रहे हैं और उसके निकट आ रहे हैं।

परमेश्वर के वचन को सुन कर विश्वास करने वाले ऐसे ही लोगों के मार्गदर्शन के लिए दिनांक 15 नवम्बर 2018 को गुड बुक्स एजुकेशनल ट्रस्ट एवं मिनिस्ट्री एडवांसमेन्ट टीम (मैट) रांची के तत्वावधान में एक दिवसीय प्रार्थना सहभागिता सभा का अयोजन, एच.आर.डी.सी. सभागार, जी.ई.एल. चर्च मिशन कम्पाउण्ड, रांची में किया गया। इस सभा के मुख्य वक्ता डॉ. ए.यू.हंस, सदस्य मैट और श्री शेत सोनवानी, मैट के फॉलोअप एण्ड सीकर्स मीटिंग के सब-कमेटी के संयोजक, थे।

सभा का आरम्भ अतिथियों और उपस्थित प्रतिभागियों के स्वागत के द्वारा हुआ। श्री शेत सोनवानी ने आभार व्यक्त करते हुए अपने सन्देश का आरम्भ किया। उन्होंने मत्ती 16:13-19 को उद्धृत करते हुए बताया कि जीवन क्या है? जीवन का सबसे बड़ा प्रश्न क्या है? लोग मनुष्य का पुत्र (प्रभु यीशु) को क्या कहते हैं? उनके संदेश का सार था कि प्रभु यीशु मसीह ही मार्ग, सत्य और जीवन हैं, जिसने कहा, ''मैं इसलिए आया हूं कि वे जीवन पाएं और बहुतायत से पाएं'' (यूहन्ना 10:10)।

मुख्य वक्ता डॉ. ए.यू. हंस ने बताया कि हम सब अलग-अलग ढंग से सोचते हैं, हमारी पृष्ठभूमि भी अलग-अलग है। मगर जब हम प्रभु यीशु को ग्रहण करते हैं, तो हम सब एक हो जाते हैं। उन्होंने बहुत ही सरल तरीके से सिखाया कि कैसे हम परमेश्वर की खोज करते हुए उसके अनुग्रह में आगे बढ़ सकते हैं।

बहन सुश्री नीलम सोनाली तिर्की ने उपस्थित लोगों को गुड बुक्स एजुकेशनल ट्रस्ट की सेवकाई के बारे में जानकारी दी। उनको संस्था के द्वारा प्रसारित रेडियो कार्यक्रम, जीवन वृक्ष नाम के फेसबुक के बारे में बताया। उन्होंने उनको रेडियो कार्यक्रम सुनने और जीवन वृक्ष के वीडियो देखने के लिए उत्साहित किया। श्रीमती दयामनी टोप्पो ने संस्था द्वारा संचालित अवकाशकालीन बाइबल पाठशाला और डाक बाइबल पाठ्यक्रम की जानकारी विस्तार से दी।

इस सभा में गुड बुक्स एजुकेशनल ट्रस्ट द्वारा संचालित डाक-बाइबल पाठ्यक्रम के स्टूडेन्ट भी उपस्थित थे। जिनमें से 11 लोगों को प्रमाण पत्र मैट के प्रेसिडेन्ट, रेव्ह. टी.एस.सी. हंस द्वारा प्रदान किए गए, जिन्होंने सम्पूर्ण पाठ्यक्रम (सात पाठों) को सफलता पूर्वक पूरा कर लिया था। जी.बी.ई.टी. के प्रोग्राम मैनेजर श्री प्रवीर जेम्स साईम्स ने प्रतिभागियों को आगे के कार्यक्रमों की जानकरी दी तथा बताया कि वे किस प्रकार संस्था से जुड़ कर आत्मिक जीवन में आगे बढ़ सकते हैं। श्री जी.बी. रक्षित, सेक्रेटेरी-मैट ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। सभा का समापन रेव्ह. टी.एस. सी.हंस, प्रेसिडेन्ट-मैट की प्रार्थना के साथ हुआ। इस सभा में मैट की सदस्य श्रीमती शीला लकड़ा भी उपस्थित थीं। सभा का संचालन श्री विद्युत मिंज ने सफलतापूर्वक किया।

इस सभा में रांची और आस-पास के क्षेत्रों से 43 प्रतिभागियों ने भाग लिया। उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि उनको इस कार्यक्रम की शिक्षाओं के द्वारा आत्मिक लाभ और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। उनका कहना है कि इस तरह के कार्यक्रम समय-समय पर होते रहें ताकि उन्हें आत्मिक जीवन में आगे बढ़ने के लिए और अधिक मार्गदर्शन मिलता रहे।

(इस समाचार से सम्बन्धित फोटो पृष्ठ 32 पर देखें)

आत्मिक भोजन

28 जनवरी **प्यासा मन** **भजन संहिता 63:1-4**

आमतौर पर हम तपती धूप या गर्मी के कारण ठण्डा पानी पीते हैं। यह इसलिये ताकि हमारी प्यास बुझ जाये। लेकिन यदि हमारा मन, हमारी आत्मा प्यासी हो तो यह कैसे तृप्त होगी? वचन के इन पदों से उत्तर तो स्पष्ट है कि परमेश्वर को पाकर उसके समीप जाकर ही हम सुकून एवं चैन पा सकते हैं। राजा दाऊद का यह स्वयं का अनुभव है।

प्रार्थना - हे प्रभु, हम प्रयत्न से बड़े लगन से आपकी खोज में लगे रहें।

बाइबल प्रश्न मंच

जनवरी 2019

प्रिय पाठको,

बाइबल के पुराने और नये नियम की पुस्तकों पर आधारित दस प्रश्न आप के सामने प्रस्तुत किये जा रहे हैं। प्रार्थना के साथ नीचे दिये गये पुस्तकों का गहन अध्ययन करें और प्रश्नों का उत्तर, दिये गये नियमों का पालन करते हुए, निर्धारित अन्तिम तिथि तक हमारे कार्यालय में भेज दें। अन्तिम तिथि के बाद मिलनेवाली प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

अगर आपके पास बाइबल प्रश्न मंच से संबंधित कोई सुझाव है तो बिना संकोच हमें अपने सुझाव लिख भेजें।

नियम

- यह बाइबल प्रश्न मंच सभी आयु वर्ग के लिए है।
- आपके उत्तर हमें **5 फरवरी 2019** तक प्राप्त हो जाने चाहिए।
- प्रश्नों के सर्वशुद्ध हल और विजेताओं की सूची **मार्च 2019** अंक में प्रकाशित होगी।
- पाठकों की सुविधा के लिए इस अंक में **नीतिवचन** और **इब्रानियों की पत्री** से प्रश्न पूछे गए हैं।
- **मसीही आह्वान** कार्यालय द्वारा निर्धारित उत्तरों के आधार पर ही उत्तरों की जांच की जाएगी।
- उत्तर ई-मेल / पोस्टकार्ड / अन्तर्देशीय पत्र / लिफाफा में भेज सकते हैं।
- अपने उत्तरों के साथ अपना मोबाईल नंबर अवश्य लिखें।

1. **नीतिवचन में कुल कितने अध्याय और पद हैं?**
2. **कहां लिखा है ''प्रेम वाले घर में सागपात का भोजन बैर वाले घर में पले हुए बैल का मांस खाने से उत्तम है?''**
3. **धीरज द्वारा हम कौन-सा फल खा सकते हैं?**
4. **परमेश्वर ने किससे, क्या प्रतिज्ञा की?**
5. **किन-किन घरानों के साथ प्रभु अपनी नई वाचा बांधने को कहते हैं?**
6. **''तू अपनी समझ का सहारा न लेना वरन् सम्पूर्ण मन से उसी पर भरोसा रखना'' कहां लिखा है?**
7. **कौन, किसको, क्या समझकर ताड़ना देता है?**
8. **सांतवें दिन में अपना काम निपटाकर किसने, क्या किया?**
9. **मूर्ख का क्रोध किससे भारी है?**
10. **अधोलोक और विनाशलोक की तुलना किससे की गई है?**

आत्मिक भोजन

29 जनवरी **स्थाई प्रेम** **यिर्मयाह 31:3**

इस्राएली लोग परमेश्वर क अपने लोग थे, लेकिन उनके विश्वास और विद्रोही स्वभाव के कारण उन्हें भी बंधुवाई में जाना पड़ा। यद्यपि उनकी दशा सोचनीय थी लेकिन परमेश्वर ने उनसे अपने अनन्त प्रेम का परिचय दिया। प्रिय मित्र, आज के वचन के प्रकाश में हमें क्या यह नहीं दिखता कि परमेश्वर हमारी हर बुराई, पाप और अपराध के बावजूद हमें प्रेम करते हैं। यह प्रेम तो स्थाई है, अनन्त एवं इसकी पराकाष्ठा तो कलवरी के क्रूस पर दिखी है। जब उसके पुत्र प्रभु यीशु ने हमारे पापों के लिये अपना प्राण दिया

प्रार्थना – हे प्रभु, आपके आदर्श प्रेम का प्रति उत्तर बड़ी निष्ठा और लगन से दे सकूं।

नवंबर का सर्वशुद्ध हल एवं विजेता सूची

सही उत्तर :

1.	ईश्वर का सुना हुआ	1 शमूएल 1:20
2.	यहोवा को	1 शमूएल 1:11, 2:20
3.	सनी का एपोद	1 शमूएल 2:18
4.	नबी	1 शमूएल 3:20
5.	इस्राएली वृद्धों ने	1 शमूएल 8:4
6.	विश्वास द्वारा	इफिसियों 2:18
7.	पवित्र लोगों के संगी स्वेदशी एवं परमेश्वर के घराने के हो गये	इफिसियों 2:19
8.	परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता	इफिसियों 4:24
9.	बुरे हैं	इफिसियों 5:16
10.	परमेश्वर के सारे हथियार	इफिसियों 6:11,13

सफल प्रतियोगी :

1. बसंती लुगुन, रांची (झारखण्ड)
2. मसीह दास नाग, रांची (झारखण्ड)
3. श्री सामुएल हिंज, खूंटी (झारखण्ड)
4. अन्थोनी नाग, रांची (झारखण्ड)
5. हीरामणि बड़ा, रांची (झारखण्ड)
6. निकिता तिर्की, रांची (झारखण्ड)
7. अमला रानी नाग, रांची (झारखण्ड)
8. पूजा तिर्की, रांची (झारखण्ड)
9. विजया रानी मण्डल, रांची (झारखण्ड)
10. श्रीमती रानी मण्डल, रांची (झारखण्ड)
11. डोरोथी लुगुन, मनोहरपुर (झारखण्ड)
12. श्रीमती फ्लोरा बालमुचू, चाईबासा (झारखण्ड)
13. सीमा टोप्पो, रांची (झारखण्ड)
14. जूनिका कच्छप, बलिया (उ.प्र.)
15. कीर्ति कुजूर, ईटकी (झारखण्ड)
16. ओलिभर मिंज, रांची (झारखण्ड)
17. श्रीमती चिचोन तिर्की, रांची (झारखण्ड)
18. लोरेन्स नगडुवार, रांची (झारखण्ड)
19. श्रीमती क्लेमेन्ट बीना सोना, बैतलपुर (छ.ग.)
20. श्रीमती शान्तिलता जोजोवार, चाईबासा (प. सिंहभूम)
21. श्रीमती पुष्पा मिंज, रांची (झारखण्ड)
22. जुलियानी भेंगरा, रांची (झारखण्ड)
23. श्रीमती दयामनी तोपनो, जमशेदपुर (झारखण्ड)
24. प्रेम फिलिप पोढ़, रांची (झारखण्ड)
25. रीझरेन लकड़ा, लोहरदगा (झारखण्ड)
26. मनोरमा नथानिएल, जमशेदपुर (झारखण्ड)
27. श्रीमती जुडिथ मिंज, रांची (झारखण्ड)
28. सुरा सागेन तोपनो
29. डॉ. जेसिका डीन, रांची (झारखण्ड)
30. भाई मतियस पुर्ती, रांची (झारखण्ड)
31. दुलारी गुड़िया, रांची (झारखण्ड)
32. शांति सुषिमा नंद, सिवनी (म.प्र.)
33. ज्योतिष कुमार, खगड़िया (बिहार)
34. प्रमोद मिंज, राऊरकेला (ओड़िशा)
35. श्रीमती सुशीला मिंज, राऊरकेला (ओड़िशा)
36. रोज डीन, रांची (झारखण्ड)
37. श्रीमती तेरेसा होनहगा, चाईबासा (झारखण्ड)
38. श्रीमती एस. व्ही. बेन, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)
39. श्रीमती ललिता थोमस, भोपाल (म.प्र.)
40. श्री सुभाष कुमार बाखला

एक भूलवाले प्रतियोगी :

1. श्रीमती वायलेट मसीह, भोपाल (म.प्र.)
2. कुमुद केरकेट्टा, रांची (झारखण्ड)

आत्मिक भोजन

30 जनवरी **परदेशी** **इब्रानियों 11:13-16**

एक परदेशी आया तब तक खुश नहीं पाता जब तक वह अपने स्वदेश ना लौट जाये। विश्वास के महानायक इब्राहीम, इसहाक, याकूब, मूसा एवं अनगिनित लोगों ने अपने उस नगर, उस देश को विश्वास की आंखों से देख लिया था। ये सब विश्वास की दशा में ही मरे। प्रिय एक मसीही विश्वासी भी तो इस संसार में परदेशी मुसाफिर है, जिसे अपने स्वदेश स्वर्ग को जाना है।

प्रार्थना - हे प्रभु, इस संसार से विदा होकर स्वर्ग तक जाऊं।

प्रार्थना सहभागिता सभा (15 नवम्बर 2018)

श्री शेत सोनवानी सन्देश देते हुए ।

डॉ. ए. यू. हंस पढ़ाते हुए ।

बहन नीलम सोनाली तिर्की सेवकाई की जानकारी देती हुई ।

श्रीमती दयामनी टोप्पो बी. सी. सी. की जानकारी देती हुई ।

उपस्थित प्रतिभागी ।

प्रतिभागी गवाही देते हुए ।

प्रमाण पत्र प्राप्त बी. सी. सी. प्रतिभागी ।

प्रार्थना सभा में सम्मिलित प्रतिभागी ।

आत्मिक भोजन

31 जनवरी **हृदयरूपी पटिया** **यिर्मयाह 31:31-33**

नई वाचा का बांधा जाना इसलिये हुआ क्योंकि इस्राएलियों ने पुरानी वाचा को तोड़ दिया है। इस वाचा की पहल परमेश्वर की ओर से हुई ताकि लोग परमेश्वर के साथ नये संबंध में बंध सकें। नयी वाचा तो हमारे हृदयरूपी पटिया पर लिखी गई है। सिर्फ जरूरत है कि हम इस वाचा को अपनी बुराई अपने पाप और विश्वासघात से तोड़ ना दें। प्रिय मित्र, जब प्रभु में होकर परमेश्वर ने हमसे और संसार से मेल-मिलाप कर लिया है और हमें उद्धार और नया जीवन दिया है तो हम क्यों नहीं नयी वाचा के लोग बनकर इसका सम्मान करें एवं प्रभु से आत्मिक आशीषें पायें?

प्रार्थना - हे प्रभु, हृदयरूपी पटिया पर लिखी जाने वाली वाचा को कभी ना तोड़ूं।

St. Barnabas Hospital

Church Road, Ranchi-834001 (Jharkhand)

SERVICE WITH COMPASSION

Facilities & Services

ICU / Semi ICU (आई.सी.यू)
Ventilator (वेंटिलेटर)
2D Echo (टू डी इको)
ECG (ई.सी.जी.)
Pathology (जाँच घर)
Phototherapy (फोटोथेरपी)
Colour Doppler (कलर डॉप्लर)
Digital X-Ray (डिजिटल एक्स-रे)
Sonography (सोनोग्राफी)
Physiotherapy Center (फिजियोथेरपी सेन्टर)
Colposcopy & Hystroscopy
Harmonic Scalpel
Endoscopic/Laproscopy Surgeries
All Major Surgeries
Endoscopic, Ultrasound
Pharmacy 24 X 7 (दवाखाना)
CT Scan (सी.टी. स्कैन)
Canteen & Ambulance Facilities

Departments

General & Laproscopic Surgery
Medicine
OBS & Gyne
Ortho
Dental
Dermatology
Paediatric & All Type of Vaccinations
Oncology
Anaesthesia
Radiology, Urology, Neurosurgery
Eye, Psychiatry

Brain, Spine, Nerve से संबंधित सभी बीमारियों का इलाज हमारे यहाँ उपलब्ध है।

For any query please contact

Dr. Kenneth Soymurum
Medical Superintendent
+91 9431170677

Mr. Samson Arohan
Administrator
+91 9835196318

May this New Year brings a Cheerful Note
and make ways for the Fresh & Bright New Year

Happy New Year 2019

Date of Publication : 20th of the previous month
Postal Due Date : 21/22 of the previous month

Postal Reg. No. RN/012/2016-18
RNI Reg. No. JHAHIN/2011/41181

POONAM MUSICAL

DEALS IN ALL KIND OF

MUSICAL INSTRUMENTS

Keyboard, Acoustic and Digital Piano, Acoustic and Electric Guitar, Guitar Amps and Effects, Acoustic Drums, V Drums, Violin, Accessories etc.

AUDIO SYSTEM

Installation in Church, Auditorium, Banquet Hall, Schools, Professional & Portable Sounds

RANCHI SCHOOL OF MUSIC

Registered Center of TRINITY COLLEGE OF MUSIC LONDON

Ranchi School of music provides trained faculty to teach and prepare candidates for certificate in practical and theory under Trinity College London in subject of music Piano, Keyboard, Violin, Guitar, Drum etc. Ranchi school of music is inclined towards praise and worship of the almighty God.

DANCE STUDIO

Become the Dancer you want to be

Hip-Hop Dance
Step Dance
Contemporary
Free Style
And many more

VOCAL CLASS

Semi Classical

ROCK AND POP

WESTERN CLASSICAL

PLECTRUM GUITAR

THEORY IN MUSIC

Get enrolled for the next year Music Examination from January 2019

62 New Garden Sirom Toli, Old H.B. Road, Ranchi, Jharkhand
Mob. 9771268067, 9798119470

गुड-बुक्स ट्रस्ट एसोसिएशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशित एवं *नीलम सोनाली तिर्की* द्वारा सम्पादित
प्रिन्टवेल, लालजी हिरजी रोड बाई लेन, राँची फोन नं.: 0651-2205802 द्वारा मुद्रित